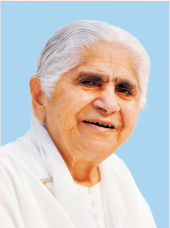

नव वर्ष के प्रति दादी जानकी जी का शुभ संदेश

भोलेनाथ शिव की अति प्रिय संतान भाइयों तथा बहनो,

नये वर्ष की कोटि-कोटि बधाइयाँ स्वीकार हों!

नवयुग हम सबके दिल-द्वार पर दस्तक दे रहा है। सतोगुणी मानवों तथा सतोगुणी प्रकृति से सजी हुई वो दैवी दुनिया आई कि आई। ऐसे में पुराने और नये वर्ष की संधिवेला के साथ-साथ पुरानी और नई दुनिया की भी यह संधिवेला है और इसका एक-एक पल बड़ा कीमती है। अवढ़रदानी, सच्चा सद्‌गुरु भगवान शिव इस समय हम सबकी झोली वरदानों से भर रहा है।

भाग्यविधाता भगवान शिव कहते हैं, समय और संकल्पों के अमूल्य खज़ाने का महत्व समझते हुए इन्हें रिंचक भी व्यर्थ नहीं गँवाओ। दृढ़ संकल्प की शक्ति से असंभव दिखने वाले कार्यों को भी साकार कर दिखाओ। एक-दो के साथ भाव-स्वभाव का मिलन करते हुए संस्कार मिलन की रास द्वारा अलौकिक प्रेम और भाईचारे का वातावरण बनाओ। कमज़ोर को कमज़ोर समझ उपेक्षित मत करो, उसे भी हिम्मत उल्लास के पंख देकर उड़ना सिखाओ। तीव्र पुरुषार्थी बन संचित शक्तियों के दान का अविनाशी लंगर लगाओ।

मैं सारी दुनिया को कहती हूँ कल किसने देखा, जो करना है अब कर लें। विनाश के पहले स्थापना का काम स्वयं भगवान धूमधाम से करा रहा है, तब तो हम प्लेटिनम जुबली मना रहे हैं। जो करना है, अब करेंगे तो उसका कई गुणा फायदा मिलेगा। अब नहीं तो कब नहीं।

परिवर्तन की इस नूतन वेला में आप सभी को नववर्ष की, नवयुग की, पुरुषार्थ में नवीनता की, सेवा की नवीन योजनाओं की बहुत-बहुत मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो!

आपकी दैवी बहन

बी.के.जानकी

अमृत-सूची

- ऐसा सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ ...4
- आदर्श पारिवारिक मूल्यों के प्रणेता *(सम्पादकीय)*........... 5
- प्रश्न विदेशी बहन-भाइयों के ...8
- पुरुषोत्तम संगमयुग एवं 11
- शिव शक्ति कौन? 13
- बाबा बगैर मैं नहीं रह सकता .14
- नया साल *(कविता)*........... 16
- ग्लोबल हॉस्पिटल की 17
- बाबा की गोद में हुआ 18
- बाबा ने कहा, शेरनियाँ.......22
- बाबा के नेत्रों से निकली......25
- सूचना-पत्र...................... 27
- बाबा ने खड़े-खड़े 28
- बाबा ने बनाया रूहानी 29
- सचित्र सेवा समाचार......... 30
- पतियों का पति मिला.........32
- गो सून, कम सून.............33
- ज्ञान-दान योजना 34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	80 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	80/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	800 /-	8,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	800/-	8,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414154383
hindigyanamrit@gmail.com

संजय की कलम से ..

ऐसा सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ

बाबा के साथ रहने का मुझे जो मौका मिला वो कोई कम नहीं मिला। ये बहनें तो सेन्टर पर चली जाती थीं सेवा करने के लिए। मैं तो रहता ही बाबा के पास था। कहीं सेवा के लिए बाबा भेजते थे तो जाता था। उस समय बहुत थोड़ी-सी सेवा थी, थोड़ी-सी मुरलियाँ निकलती थीं, वो हाथ से सिन्धी में लिखी जाती थीं। उन दिनों सिन्धी जानने वाली ही टीचर्स थीं, वे ही सुनाती थीं।

मेरे ख्याल में, शुरू-शुरू में 10-15 साल तक कोई एक भी मुरली ऐसी नहीं होगी जिसमें बाबा ने मुझे याद न किया हो, जगदीश बच्चे को याद न किया हो। दस-पंद्रह साल तक लगातार। जो पुरानी बहनें हैं उनको मालूम है, जैसे गुलजार दादी हैं, मनोहर दादी हैं, जानकी दादी हैं। ये पढ़ते थे मुरली, कहते थे बाबा ने इसको याद किया है। बाबा से हम मिलने जाते थे, तब कोई बहनें बैठी हों, बाबा से बात कर रही हों तो बाबा बहनों को कहते थे, बच्चे, अब आप जाओ। सबको भेज देते थे, फिर मेरे से बात करते थे। कई दफा इनको एतराज़ होता था कि बाबा, यह क्या करते हो। हम बात कर रहे हैं, हमको बाहर भेज दिया, अब इससे बात कर रहे हो, हँसी में कहते थे। बाबा कहते थे, जब यह बच्चा आता है, शिवबाबा मेरे में प्रवेश करता है, उनको कुछ डायरेक्शन देने होते हैं इसको। अभी तुम जाओ बेशक, अभी इसको बात करने दो। ऐसा सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ, बाबा की ऐसी पालना मिली। रोम-रोम में बाबा के कितनी प्रीत थी! ऐसा महसूस होता था कि केवल मैं ही बाबा को याद नहीं करता, बाबा भी मुझे बहुत याद करते हैं, मेरे साथ उनकी बहुत घनिष्टता है। उनका मेरे से अनन्य प्यार है, मेरा उनसे अनन्य प्यार है।

पुरानी बहनें हैं, बहुत पवित्र हैं

शुरू से मेरी यह इच्छा थी कि बाबा और मैं, तीसरा बीच में कोई नहीं – ऐसा मिलन हो। ऐसा मिलन होता भी रहा। ऐसा अनुभव किया। बाबा ने मुझे इतना प्यार किया, इतना प्यार किया कि योग लगाने में क्या कठिनाई? ये जो पुरानी बहनें हैं, ये बहुत पवित्र हैं, इसलिए उनमें कुदरती प्यार है ही। ये रहमदिल हैं, हरेक के प्रति इनकी बहुत शुभ भावना है। जब मैं आया था, मैं तो कुछ भी नहीं था। इन्होंने ही पालना दी। इन्होंने ही मुझे आगे बढ़ाया, मार्गदर्शन किया। स्वाभाविक है, इनके उगाये हुए फूल हैं हम, तो ये हमारी रखवाली तो करेंगे, स्नेह तो देंगे। ऐसा हमारा जीवन प्यार का, मम्मा, बाबा और बड़े भाई-बहनों के साथ व्यतीत हुआ। बहुत-से लोग पूछते हैं कि योग कैसे लगायें, योग कैसे लगायें? एक ही सूत्र (फार्मूला) है योग का कि प्यार करो, प्यार करो; बाबा से तीव्रतम प्यार करो। बस, यही योग है।

निरक्षरी भट्टाचार्य

भारत में एक फिल्म आई थी, उन दिनों दीवार पर लिखा जाता था फिल्मों का नाम। एक बहन जब देहली से मधुबन जाती थी तो उन फिल्मों का नाम बाबा को बताती थी, कहती थी बाबा, आजकल यह फिल्म आई हुई है। बाबा का फिल्म से क्या संबंध है? यह तो विरोधात्मक वस्तु है ना। लेकिन बाबा फिर उस पर समझाते थे। आपने देखा होगा कि दुनिया के जो गीत हैं उनका भी बाबा ने कितना अच्छा आध्यात्मिक अर्थ बताया! तो एक फिल्म आई थी, 'अनपढ़', दूसरी थी, 'मैं चुप रहूँगी'। बाबा ने कहा, 'मैं अनपढ़ हूँ और मैं चुप रहूँगी' ये तुम्हारे ऊपर लागू होता है। ये फिल्में तुम्हारे कारण बनी हैं। बूढ़ी-बूढ़ी मातायें हैं,

(शेष..पृष्ठ 10 पर)

आदर्श पारिवारिक मूल्यों के प्रणेता ब्रह्मा बाबा

पिताश्री ब्रह्मा बाबा अपने लौकिक जीवन में दादा लेखराज के नाम से जाने जाते थे। वे हीरे-जवाहरात के बहुत बड़े व्यापारी थे। लोग उन्हें 'खिदरपुर का बादशाह' भी कहते थे। उनके घर के सुख-शान्ति से भरे वातावरण को देखकर पास-पड़ोस के बच्चे भी यह कामना किया करते थे कि काश! उन्हें भी दादा के घर जन्म मिलता तो कितना अच्छा होता। जब वे सुबह-सुबह घूमने जाते तो मिलने वाले लोग गर्व से कहते, आज हमारा सारा दिन बहुत अच्छा गुज़रेगा क्योंकि सुबह-सुबह आपके दर्शन हो गये। वे धार्मिक कार्यों में सबसे आगे रहते और बाकी लोग धर्म-पुण्य के कार्यों में उन्हीं से प्रेरणा लेते।

दादा लेखराज से समाज के लोगों का जितना स्नेह था, उतने ही घर में भी वे सभी के स्नेह-पात्र थे। बच्चे, पुत्रवधू, सेवकगण, पत्नी – सभी से उनका दिल का सच्चा स्नेह था। वे घर-बाहर के लोगों को स्नेह से जोड़कर रखने की कला जानते थे और सभी को अपने व्यवहार से संतुष्ट करते थे।

भाई के बच्चों से स्नेह

बड़े भाई के देहांत के बाद उन्होंने अपने भतीजे विश्वकिशोर (जिन्हें सभी प्यार से भाऊ कहते हैं) तथा उनके भाई-बहनों को अपने बच्चों से भी बढ़कर स्नेह-सम्मान दिया। भाऊ को कोलकाता के न्यू मार्केट में हीरे-जवाहरातों के शोरूम जैसी एक बहुत बड़ी दुकान बनवाकर दी। वह जवाहरात का जैसे म्यूजियम था। बहुत विदेशी भी वहाँ आकर नमूना देखकर ऑर्डर दे जाते थे। यह दुकान भी जैसे खुदरा माल बेचने का बाबा का ही केन्द्र था। इस केन्द्र पर यदि कोई थोक माल लेने आते तो भाऊ उन्हें पहली मंज़िल वाली गद्दी (दादा लेखराज की थोक दुकान) पर भेज देते थे। इस प्रकार, बाबा का भाऊ पर शुरू से बड़ा प्रेम और विश्वास था। वे बाबा के भाई और पुत्र – दोनों पार्ट एक साथ बजाते थे। शुरू से बाबा ने जो कहा, भाऊ सदा हाँ जी कहकर करते थे। बाबा समर्पित हुए तो भाऊ भी बाबा का अनुसरण कर, तन-मन-धन सहित यज्ञ में समर्पित हुआ और अंत तक बाबा के अंग-संग रह यज्ञ के हर कार्य को विधिपूर्वक सम्पन्न किया।

पत्नी का सम्मान

बृजेन्द्रा दादी बताती थी कि लौकिक जीवन में भी बाबा बहुत मिलनसार और सर्वस्नेही थे। उनका सिखाने का ढंग बहुत ही निराला था। बाबा को भक्ति भी जसोदा माता ने ही सिखाई थी। जसोदा माता हमेशा भक्ति में लीन रहती थी। एक बार हम सपरिवार कोलकाता घूमने गए थे। जसोदा माता वहाँ भक्ति में इतनी लीन हो गई, जो ट्रेन का समय हो गया पर तल्लीनता में उसे पता ही नहीं चला। उस ज़माने में कारें तो थी नहीं, फिर बाबा ने घोड़ागाड़ी मँगवाई और सारा परिवार सामान सहित स्टेशन पहुँचा, देखा, सामने से ट्रेन जा रही थी। बाबा को मालूम था कि ट्रेन चली गई होगी परंतु यह मालूम होते भी, सिखाने के लिए ही बाबा लेकर गया और कुछ भी बोला नहीं। जसोदा

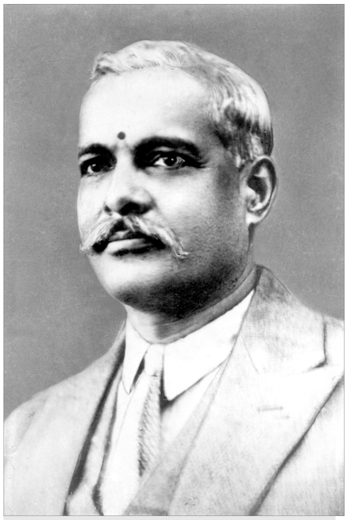

दादा लेखराज

माता ने कहा, अरे, ट्रेन सामने से जा रही है! बाबा सिर्फ मुस्कराए, बोले कुछ नहीं। कैसे समय का पाबंद रहना है, यह सिखाने के लिए बाबा ने यह सब किया था। फिर सामान सहित सब स्टेशन से वापस आए, टिकट भी व्यर्थ गए। आगे की यात्रा अगले दिन ही संभव हो पाई पर फिर भी बाबा का इतना शांत स्वभाव था कि सब साक्षी होकर के देखा। प्रथम नंबर की आत्मा के अंतिम जन्म तक भी, रॉयल्टी के संस्कार गये नहीं थे।

सहयोगियों का मान

दादी जानकी जी सुनाती हैं कि मेरे मामाजी, दादा लेखराज की हीरे-जवाहरात की दुकान पर, दादा के सहयोगी के रूप में सेवा करते थे। एक बार दो ग्राहक आये, हीरे देखे, पैकिंग करवाई और उसे वहीं छोड़कर, यह कहकर दुकान से बाहर चले गये कि हम रुपये लेकर आते हैं। थोड़ी देर बाद वे आये और कहने लगे, हमें रुपये नहीं मिले, आप ये हीरे वापस रख लीजिये, हम फिर ले जायेंगे। परंतु, वे अपने साथ उसी प्रकार की नकली हीरों की पैकिंग ले आये थे, चुपके से उन्होंने उसे बदली कर लिया, असली हीरे ले गये और नकली हीरों की पैकिंग छोड़ गये। मामाजी ने पैकिंग खोली तो ठगे से रह गये। दादा लेखराज को बताया तो ज़रा भी क्रोध नहीं किया। और ही मामाजी को सांत्वना दी कि आप ख्याल ना करना, ये भी लेन-देन के हिसाब होते हैं। बाबा का सहयोगियों के प्रति गहरा विश्वास और सम्मान देख मामाजी अति प्रभावित हुए।

बहुओं से स्नेह

बाबा ने भाऊ को पुत्र की भाँति रखा और उनकी युगल जिसे हम यज्ञ में संतरी दादी के नाम से जानते हैं, को पुत्री की भाँति रखा। इनकी मीठी-मीठी बातें व सेवा भाव देखकर बाबा उन्हें हमेशा सन्तरू बेटा कहते थे। बहू के रूप में वह बाबा के सामने सिर ढककर और सिर झुकाकर चलती थी पर बाबा ने, एक बार, सबके सामने उसकी चुन्नी को हाथ से उतारकर अपनी युगल यशोदा को दे दिया और कहा, आज से यह कभी भी बहू के रूप में इस प्रकार झुककर नहीं चलेगी। जैसे घर की बच्चियाँ पहनती हैं, रहती हैं, चलती, बोलती हैं, ऐसे ही रहेगी। उन्हें भी बाबा से सच्चा पिता होने की भासना आती थी। बाद में भाऊ के साथ दादी सन्तरी भी यज्ञ में समर्पित हुई और यज्ञ में अनेक प्रकार की सेवायें की। प्रारंभ से ही उन्होंने संदेशी का भी बहुत अच्छा पार्ट बजाया।

इसी प्रकार अपने सगे पुत्र किसन के लिए बाबा ने राधिका नाम की अति सुन्दर और गुणवान कन्या को पसन्द किया जिसे बाबा ने पुत्रवधू के रूप में इतने गहने पहनाये कि जब वे राजदरबार में बाबा के साथ जाती थी तो रानियाँ-महारानियाँ सिर्फ उनका शृंगार देखकर शर्मिन्दा हो जाती थीं। बाद में बाबा में, शिवबाबा की प्रथम प्रवेशता को प्रत्यक्ष देखने वाली राधिका ने गहनों का संन्यास कर, बृजइन्द्रा नाम से हड्डी-हड्डी ईश्वरीय सेवा में समर्पित की।

सास का सम्मान

बाबा की लौकिक पत्नी जसोदा जी सुनाती थी, एक बार मेरे यहाँ मेरी स्टेप मदर (सौतेली माँ) आई थीं। मैं अन्दर थी। बाबा ने कहा, जसोदा, तुम्हारी स्टेप मदर आई हैं। बाबा के मन में कोई ऐसा भाव नहीं था पर उनके मुख से अनजाने ही में ये शब्द निकल गये थे। कुछ समय वहाँ बैठकर, मेरी माताजी चली गईं। रात्रि को जब बाबा घर में आये तब मैंने पूछा, भोजन ले आयें? बाबा ने कहा, आज मैं भोजन नहीं करूँगा क्योंकि जब आपकी लौकिक माताजी (सौतेली) आई थीं तब मैंने आपसे कहा था कि आपकी स्टेप मदर आई हैं, यह सुन आपकी माताजी को दुख अनुभव हुआ होगा। उनकी दुखानुभूति का स्पन्दन मेरे मन को स्पर्श कर रहा है। जब तक उनसे

क्षमा न माँग लूँ तब तक भोजन नहीं करूँगा।

कहने के बावजूद भी उस रात्रि को बाबा बिना भोजन किये ही सो गये। दूसरे दिन अमृतवेले मुझे साथ ले बाबा अपने ससुराल (मेरे मायके) में गये। बाबा को देखकर सभी लोग बहुत खुश भी हुए और कुछ सोचने लगे कि इस समय अनायास ही बाबा कैसे आये हैं। जब माताजी पास आई तो बाबा बोले, कल आपके वहाँ आने पर मैंने ठीक शब्द नहीं बोले, अवश्य ही मेरी बात सुनकर आपको मानसिक कष्ट हुआ होगा उसके लिए मैं आपसे क्षमा माँगने आया हूँ।

मेरी स्टेप मदर घूंघट किये हुए थीं और वे घूंघट में ही मुझसे कह रही थीं कि ऐसी तो कोई बात नहीं है। इतना कहकर वे चुप हो गई। बाबा ने कहा, नहीं, नहीं, आपको मेरी बात बुरी अवश्य लगी है। तब मैंने भी कहा, माताजी, आप स्पष्ट बता दीजिए न! कल रात को इन्होंने इसी बात के कारण न खाना खाया, न ही दूध पीया। अब भी अगर आप नहीं बतायेंगी तो हो सकता है कि ये प्रायश्चित के रूप में खाना ही न खायें।

यह सुनकर माताजी ने कहा, 'आपकी स्टेप मदर आई हैं' यह शब्द मुझे नहीं भाया। 'स्टेप मदर' यह नाम खराब है न! मैंने सोचा कि मैं

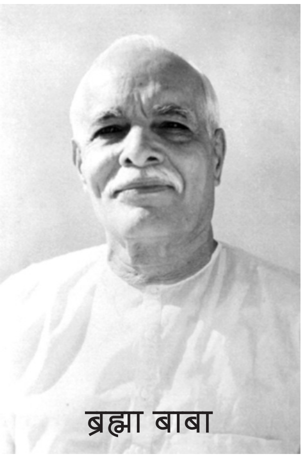

ब्रह्मा बाबा

व्यवहार तो ठीक ही करती हूँ, तब मालूम नहीं इन्होंने मुझे यह नाम क्यों दिया..। उनका वाक्य पूरा होते ही बाबा ने झुककर कहा, मुझे माफ कर दीजिए। दामाद के ऐसे शब्द सुनकर मेरी माता और मेरे पिता, दोनों रोने लग गये (क्योंकि उन दिनों यह रिवाज था कि सास-ससुर ही दामाद का सम्मान करते थे) तब मैंने भी उनसे कहा कि अब माफ कर दो।

इस प्रकार बाबा अपने शब्दों द्वारा भी किसी को दुखानुभूति ना हो, ऐसी छोटी-छोटी बातों पर भी बहुत ध्यान देते थे।

ब्रह्मा बाबा अपने लौकिक जीवन में विभिन्न संबंधों और विभिन्न आयुवर्ग के लोगों को जीवन-भर प्यार-स्नेह-सहयोग से साथ लेकर सफलता की ओर अग्रसर रहे। इन्हीं गुणों के आधार पर ही भगवान ने उन्हें बेहद विश्व-परिवार को पालना देने के निमित्त बनाया।

सन् 1937 में शिवपिता ने दादा लेखराज के तन में प्रवेश करके, उन्हें तन-मन-धन सहित समर्पित करवाया तब प्रारंभ में 400 की संख्या में बच्चे और बड़े, उनके सानिध्य में आध्यात्मिक ज्ञान में निपुण बने। सन् 1950 के बाद भारत में विभिन्न शाखायें खुली तो 'ब्रह्मा की हज़ार भुजाएँ' इस गायन के अनुसार बच्चों की संख्या बढ़ती गई। बाबा ने कम साधनों में, अपने त्याग और तप के बल से बच्चों को जो पालना दी, उसकी छाप आज भी सबके दिलों पर अमिट है।

आज जबकि पारिवारिक और सामाजिक मूल्य बदल रहे हैं, संयुक्त परिवार का महत्त्व मानव भूलता जा रहा है, हर रिश्ते में स्वार्थ की दरारें पड़ रही हैं, लोगों की भारी भीड़ होते भी मानव को अपना कहने को कोई मानव नहीं मिलता है, ऐसे में ब्रह्मा बाबा का जीवन प्रकाश स्तंभ की तरह हमारा मार्गदर्शन कर रहा है। आज भी सूक्ष्म रूप से, सूक्ष्म वतन से अपनी मार्गदर्शना से हम सबमें बल भर रहे हैं। उनके कदमों पर कदम रखकर चलते हुए हम भी उनके समान जन-जन के दिल में स्नेह भरा स्थान बनाने में, सर्व को सहयोग देकर ऊँचा उठाने में सक्षम हो पा रहे हैं।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

प्रश्न विदेशी बहन-भाइयों के, उत्तर दादी हृदयमोहिनी जी के

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सह-मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी अपनी गंभीरता, अंतर्मुखता, निरसंकल्प अवस्था, सहनशीलता, समायोजन शक्ति और नम्रता आदि गुणों के कारण सबकी प्रेरणास्त्रोत हैं। आप शिवपिता परमात्मा की अव्यक्त शिक्षाओं के लिए साकार माध्यम भी हैं। आपके चेहरे की रूहानियत दूर से ही चुंबक की तरह आत्माओं को आकर्षित कर उनमें शीतलता और शक्ति भर देती है। आपके पास अलौकिक अनुभवों का अमूल्य भण्डार है। प्रस्तुत हैं विदेशी भाई-बहनों द्वारा पूछे गये प्रश्न और दादी हृदयमोहिनी जी द्वारा दिये गये मन को हर्षाने वाले उत्तर..

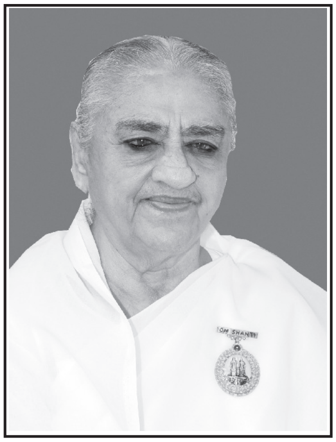

प्रश्नः- आप छोटी उम्र में बाबा के पास आई, तो आपकी पालना कैसे हुई?

उत्तरः- हम छोटेपन में ही बाबा के पास पहुँचे। बचपन में ही साकार पालना का सुनहरा मौका मिला। ज्ञान और योग की बातें तो पीछे सुनी लेकिन बाबा को देखते ही लगा कि ये ही हमारे जन्म-जन्म के माँ-बाप हैं। बाबा की दृष्टि मिलने से बेहद खुशी होती थी। मन में आता था कि हमारे जैसी पालना दुनिया में किसी शहज़ादी को भी नहीं मिल सकती। लक्ष्मी-नारायण के बच्चों की भी ऐसी पालना नहीं होगी जैसी साकार बाबा ने हमारी की। दुनिया में कोई ऐसा साकार में बाप नहीं होगा जो सवेरे गुडमार्निंग भी करे, दृष्टि भी दे, खुशी के झूलों में भी झुलाये और फिर रात्रि को गुडनाइट करने भी आए। दृष्टि देकर खुशी और शक्ति का अनुभव कराये।

बाबा समय प्रति समय हमें वरदान देते थे कि बच्ची, तुम भगवान के समीप आई हो। कभी कहते थे, आप पर भगवान राज़ी हो गया है और आपने भगवान को राज़ी कर लिया है। कभी भी बाबा हमें देखता था या हम बाबा को देखते थे तो हमारी दृष्टि चेहरे पर नहीं जाती थी, मस्तक में जो ज्योति बिन्दु रूप आत्मा है, वो ही देखने में आती थी। उसी नशे और खुशी में हम बहुत अच्छी रीति से चलते रहे। ब्रह्मा बाबा की हिम्मत देखके, उनके चरित्र की कहानियाँ सुनके हमें यही लगता था, वाह! मेरा बाबा वाह! ऐसा बाबा तो सतयुग में भी नहीं मिलेगा। ब्रह्मा बाबा नाम ही तब पड़ा जब शिवबाबा ब्रह्मा में प्रवेश हुआ, तो हम कभी भी बाबा को देखते थे तो ब्रह्मा बाबा में शिवबाबा का अनुभव करते थे।

बाबा की हिम्मत को देखके हम बच्चों में ऐसी हिम्मत आई, जो कोई भी कुछ भी कहता था, तो हम कहते थे, हमारा बाबा हमारे साथ है, हमको कोई फिकर नहीं है, कोई परवाह नहीं है। बाबा के पास रहते जब थोड़े दिन हो गये तो कई लौकिक जान-पहचान वाले भाई-बहनें हमें कहने लगे, आप इतने थोड़े बच्चे हो और कहते हो, हम विश्व परिवर्तन करेंगे, कैसे करेंगे? आपको पता है विश्व कितना बड़ा है? हमने कहा, हमने विश्व का नक्शा तो नहीं देखा है लेकिन हमें निश्चय है कि हमें भगवान ने कहा है, तुमको विश्व परिवर्तन करना है, तो बस हमें करना ही है। ब्रह्मा बाबा ने इतना कुछ किया तो हम क्या नहीं कर सकते।

प्रश्नः- जब आप बाबा के अंग-संग रहे, तब बाबा ने आपको कोई इशारा दिया था कि आपके द्वारा अव्यक्त शिक्षाओं का उच्चारण होने वाला है?

उत्तरः- बचपन से ही हमारा ट्रांस का पार्ट था। तीनों लोकों की बातें, परमधाम क्या है, सूक्ष्मवतन क्या है, सूक्ष्म ब्रह्मा क्या है, यह सब शुरू में हमने ही ट्रांस में देखा। इससे बाबा ने समझा कि शिवबाबा ने नये-नये राज़ समझाने के लिए इस बच्ची को निमित्त बनाया है। हम तो 80 बच्चों के साथ, मम्मा के भवन में रहते थे लेकिन बाबा ने ट्रांस के पार्ट के कारण एकांत में अपने साथ, अपने ही मकान में मुझे रखा और एकांत में रहने के लिए विशेष सहयोग दिया। एक बार हम गद्दी पर बैठे थे, बाबा भी बैठे थे तो बाबा ने हाथ में हाथ देकर दृष्टि दी और गले लगाते हुए कहा, बच्ची, तुमको पता है कि ड्रामानुसार तुम्हें एक वरदान है, जैसे बाबा यह पत्र लिख रहा है, वैसे आप भी पत्र लिखेंगी। मैंने पूछा, मैं कैसे पत्र लिखेंगी? बाबा ने कहा, आगे चलो, तुम्हारे द्वारा यह कार्य होना है। थोड़े समय के बाद मैंने देखा कि जो भी मैं ट्रांस में देखती थी वो हमको संदेश के मुआफिक लिखना ही पड़ता था। तो यह वरदान बाबा ने मुझे दिया और कुछ समय बाद यह ट्रांस का पार्ट बढ़ता गया, तो जो भी संदेश बाबा ट्रांस द्वारा देता था वो हमें पत्र से लिखकर भेजना पड़ता था।

फिर एक दिन बाबा ने कहा, बच्ची, तुम्हारी आँखें बहुत सेवा करेंगी। हमको तो समझ नहीं आया कि आँखें कैसे सेवा करेंगी। पर जब ब्रह्मा बाबा अव्यक्त हुए, उसके बाद जब शिवबाबा प्रवेश करते हैं तो इस रथ के नयनों द्वारा बाबा सेवा करते हैं और जब तक बाबा करायेंगे तब तक करते रहेंगे। साथ में मम्मा का भी हमको वरदान मिला। रात्रि को जब सभी अपने को चेक करने के लिए बैठते थे, जैसे दरबार लगती थी, उसमें एक दिन हम पीछे बैठी थी। मम्मा ने कुछ पूछा और मैंने पीछे से ही उत्तर दिया, तो मम्मा ने कहा, यह कौन बोल रहा है? मैंने हाथ उठाया, मम्मा ने कहा, बच्ची, तुम्हारी वाणी बहुत सेवा करेगी। तो बाबा ने मुझे पत्र लिखने का, दृष्टि देने का और मम्मा ने वाणी द्वारा सेवा करने का वरदान दिया। बाबा और मम्मा के वही वरदान सेवा कर रहे हैं। दृष्टि तो बाबा ही देता है और बोल भी बाबा के ही होते हैं लेकिन मेरे मुख और आँखों से बाबा सेवा कराता है। इस बात की मुझे बहुत खुशी है।

प्रश्नः- अव्यक्त पार्ट का क्या राज़ है?

उत्तरः- जब बाबा के शरीर का संस्कार हो गया, उसके बाद हम भोग लगाने बैठी तब अव्यक्त ब्रह्मा और शिवबाबा मेरे तन द्वारा बच्चों से मिलने आये। उस समय बाबा ने जो मुरली चलाई उसमें बच्चों को यही अनुभव हुआ कि बाबा साकार में जो शब्द बोलते थे, मिलते थे, इशारे देते थे, वो ही सब इस मिलन द्वारा हुआ। इससे सभी बच्चों को अनुभव हो गया कि बाबा गये नहीं हैं और बाबा ने ये शब्द भी बोले कि बच्चे, मैं गया नहीं हूँ, मैंने सिर्फ कपड़ा और कमरा बदली किया है, बाकी मैं आपके साथ हूँ और आपके साथ रहूँगा। बाबा ने मुझे भी कहा, बाबा आपको इस पार्ट के लिए निमित्त बना रहे हैं। इसके बाद बाबा के आने का पार्ट शुरू हुआ और हरेक बच्चे को अनुभव हुआ कि बाबा हमारे साथ है लेकिन अव्यक्त इसलिए हुए हैं कि व्यक्त शरीर में व्यक्त बंधन भी बहुत हैं। बाबा ने कहा, अव्यक्त हुआ हूँ विश्व सेवा के लिए, जब, जहाँ जाना चाहूँ जा सकता हूँ, जिस बच्चे से मिलना चाहूँ मिल सकता हूँ। यह अनुभव सभी बच्चे करते रहेंगे।

प्रश्नः- जब बाबा वापिस जाते हैं और आप शरीर में आती हो उस समय की आपकी फीलिंग क्या है, आप थके हुए अनुभव करते हो या और कुछ?

उत्तरः- जब भी बाबा का पार्ट चलता

है तो मैं वतन में नहीं होती हूँ, मेरी आत्मा शरीर में ही होती है लेकिन ऐसी स्वीट साइलेंस में बाबा हमको ले जाता है जो इस साकार दुनिया का कुछ पता नहीं चलता है। वो साइलेन्स ऐसी मीठी लगती है जो हम समझते हैं कि जितना ज्यादा समय रहें उतना अच्छा है। बाकी शुरू में वतन में जाते हैं, बाबा से वतन में मिलते हैं फिर बाबा जब वतन में लौटना चाहते हैं, तब भी मुझे इमर्ज करते हैं यानि स्वीट साइलेन्स के अनुभव से फिर मैं अपने को वतन में अनुभव करती हूँ। स्वीट साइलेन्स में मुझे कुछ सुनाई नहीं देता है, कुछ अनुभव नहीं होता है सिर्फ उसका सुख ऐसे अनुभव होता है जो उसमें कितने घंटे भी बैठें तो थकावट नहीं होती है और यह अनुभव मुझे बहुत अच्छा लगता है। बाबा ने मुझे बता दिया है कि सेवा का पुण्य सबसे ज्यादा होता है। अगर इस पार्ट द्वारा अनेक आत्माओं को बल मिलता है, खुशी होती है या अव्यक्त स्थिति का अनुभव होता है तो मुझे उन्हों की दुआयें बहुत मिलती हैं। बीमारी हो, कुछ भी हो लेकिन समय पर बाबा तैयार कर देता है। लोगों की दुआओं की खुशी मुझे बहुत ताकत देती है।

मैं और मेरा, तू और तेरा इन चार शब्दों ने ही संपूर्णता से दूर किया है। इन शब्दों को संपूर्ण मिटाना है इसलिए हर बोल में सिर्फ बाबा, बाबा और बाबा ही निकले।

ऐसा सौभाग्य मुझे...पृष्ठ 4 का शेष

और कुछ पढ़ नहीं सकती हैं, गाँव से आती हैं, निरक्षर भट्टाचार्य हैं। भट्टाचार्य का अर्थ है बड़े विद्वान। बूढ़ी-बूढ़ी मातायें हैं निरक्षर भट्टाचार्य। अक्षर नहीं जानतीं लेकिन बड़ी विद्वान हैं क्योंकि ऊँचे-से-ऊँचे बाप को जानती हैं।

जब मैं ज्ञान में आया था तब बाबा ने कहा, बच्चे की बुद्धि में भूसा भरा हुआ है। मैं देखने लगा कि भूसा कहाँ भरा हुआ है, निकालूँ उसको। एक भूसा होता है जो गाय-भैंस को खिलाने के काम आता है, यह जो उल्टे ज्ञान वाला भूसा भरा है वो बिल्कुल फेंकने वाला भूसा है। यह गाय-भैंस के काम भी नहीं आता। यह सड़ा हुआ भूसा है। सड़ा हुआ भूसा गाय के आगे चारा बनाकर रख दो, वो सूँघके भूखा रहना मंजूर करती है लेकिन खाती नहीं है। हमारी बुद्धि में जो सारा उल्टा ज्ञान फँसा हुआ है, यह भूसा है, वो भी सड़ा हुआ। मैंने सोचा, यह तो मुश्किल काम हो गया सड़े हुए भूसे को निकालना। इस तरह, बाबा की बातें बहुत अजीब और अनोखी होती हैं।

प्रेम की भी पीड़ा होती है

विदेश में एक समर्पित ब्रह्माकुमारी बहन से मैंने पूछा, आप 'प्रेम गली' में गुजरी हो? उसको उतनी हिन्दी नहीं आती थी तो उसने समझा कि प्रेम गली कोई गली का नाम होगा। एक अन्य बहन से उसने पूछा, 'प्रेम गली' कहाँ है? मैंने कहा, कोई बात नहीं, प्रेम गली का नहीं पता, प्रेम की पीड़ा, प्रेम के दर्द का अनुभव हुआ है? उसने पूछा, प्रेम से दर्द क्यों होता है? पास में जो बहन थी, उसने कहा, देखो, मीरा का गीत है 'मैं तो प्रेम-दीवानी, मेरा दर्द न जाने कोई।' है ना यह गीत मीरा का! प्रेम का दर्द होता है। प्रभु-प्रेम की यह आग बुझाये न बुझे। यह प्रेम की आग सताने वाली याद होती है। जिसको यह प्रेम की आग लग जाती है, फिर यह नहीं बुझती। प्रभु-प्रेम की आग सारी दुनियावी इच्छाओं को समाप्त कर देती है। एक गीत में भी है कि 'हे प्रभु, आपका मुझसे जो प्यार है, आपसे मेरा जो प्यार है, उसको एक आप जानते हो और एक मैं जानता हूँ, और न जाने कोई।' आपको लगता है, बाबा से मेरा प्यार ऐसा है? बाबा भी हमसे इतना प्यार करता है, हमारे बिना बाबा भी रह नहीं सकता। बाबा को नींद नहीं आती। भगवान नींद नहीं करता। क्यों? क्योंकि बच्चों से उसका इतना प्यार है, उनको याद करता है तो सोयेगा कैसे? यह एक बात भी हमारे ध्यान में आ जाये – प्यार, प्रभु का प्यार। उसका मुझसे प्यार है, मेरा उससे प्यार है, तो भी कल्याण हो जाये ❖

पुरुषोत्तम संगमयुग एवं परमात्मा की कार्यपद्धति और कार्यप्रणाली -2

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

पिछले लेख में मैंने सिद्ध करने का प्रयत्न किया था कि भगवान के घर देर भी नहीं है और अंधेर भी नहीं है और हमें परमात्मा की कार्य पद्धति और कार्यप्रणाली को समझने का पूरा पुरुषार्थ करना चाहिए परंतु वास्तविक दुनिया में लोग अपनी भावना व इच्छा के आधार पर परमात्मा की कार्यप्रणाली को समझने की कोशिश करते हैं। अगर हम परमात्मा की कार्यप्रणाली को समझ लें तो हम ईश्वरीय सेवाओं में बहुत आगे बढ़ सकते हैं और बहुत अच्छी रीति से सेवायें कर सकते हैं परंतु हम परमात्मा की कार्यप्रणाली को न जानने के कारण अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं व भावनाओं के आधार पर परमात्मा की कार्यपद्धति को जाँचने का काम करते हैं।

परमात्मा की विशिष्ट प्रकार की कार्यपद्धति के बारे में मैं इस लेख में रोशनी डालना चाहता हूँ। बात सन् 1968 की है। जब से मैं बाबा का बच्चा बना तब से बाबा को कहता था कि बाबा, अपने ईश्वरीय कारोबार में मकान खरीदने के सिद्धांत में परिवर्तन करना चाहिए। आपका जो सिद्धांत है कि पांडव गवर्मेन्ट कौरव गवर्मेन्ट के आगे रजिस्टर्ड नहीं हो सकती, इसमें समझौता करना चाहिए। लौकिक दुनिया में संस्था रजिस्टर्ड होती है तो उसकी संपत्ति सुरक्षित रहती है। अगर रजिस्टर्ड नहीं होगी तो हर कारोबार के साथ संपत्ति के स्वामित्व में भी परिवर्तन करना पड़ता है। इसलिए अपना एक रजिस्टर्ड ट्रस्ट होना चाहिए। आखिर नवंबर 1968 में प्यारे ब्रह्मा बाबा ने हमें पत्र लिखा कि बच्चे, तुम कई बार ट्रस्ट बनाने की बात करते हो, उसके बारे में तुम और कुमारका बच्ची दोनों मधुबन आओ। दादी प्रकाशमणि और मैं मधुबन पहुँचे। बापदादा ने चार लोगों की कमेटी बनाई, हम दो, दीदी मनमोहिनी तथा दादा आनंद किशोर और कहा कि यह ट्रस्ट कैसे बन सकता है, इसके कानूनी स्वरूप के बारे में आप सभी चर्चा करो। आप जो भी निर्णय लेंगे, उसे मैं रात्रि क्लास में स्वीकार करता जाऊँगा।

पाँच-छह दिनों तक इसके बारे में चर्चा करने के बाद आखिर में प्रश्न उठा कि इस ट्रस्ट का मैनेजिंग ट्रस्टी कौन बनेगा, ब्रह्मा बाबा ने मुझे मैनेजिंग ट्रस्टी बनने को कहा। मैंने इस बात पर मना करने के लिए बहस की। आखिर में ब्रह्मा बाबा ने कहा कि रमेश, तुम हर कल्प मैनेजिंग ट्रस्टी बने हो, वर्तमान में भी तुम्हें ही बनना है और भविष्य में भी तुम ही बनोगे। तब मैंने नया बहाना बनाया। बहानेबाजी में तो हम सभी का पहला नंबर है, इस बात की अव्यक्त मुरली तो आप सबको मालूम ही है। मैंने कहा कि बाबा, मैंने जो पढ़ाई पढ़ी है, उसके आधार पर तो मैं आयकर (Income Tax) का वकील हूँ, मुझे मैनेजिंग ट्रस्टी के रूप में काम करने का कोई अनुभव नहीं है। तब ब्रह्मा बाबा ने कहा कि इस ट्रस्ट के नाम पर यज्ञ सेवा अर्थ मकान आदि बनाने या खरीदने की स्वीकृति है। ट्रस्टी के रूप में कारोबार करते समय कोई भी समस्या आये तो बाबा तुमको वरदान देता है कि अगर समस्या का समाधान नहीं मिला तो शिवबाबा की याद में बैठकर अपने कल्प पहले के संस्कार को इमर्ज करना कि मैंने पाँच हजार वर्ष पहले भी यह कार्य संपन्न किया था और फिर बाबा तुम्हारे में वही संस्कार इमर्ज कर देगा और तुम निर्विघ्न कारोबार कर सकोगे। इस प्रकार से बाबा ने नये प्रकार की परमात्मा की कार्यपद्धति वरदान के रूप में मुझे सिखाई और बाद में हम सब जानते हैं कि ब्रह्मा बाबा भी अव्यक्त हो गये और ट्रस्ट के नाम पर यज्ञ द्वारा अनेक

प्रकार की स्थूल संपत्ति खरीदी गई। लौकिक दुनिया में स्थूल संपत्ति खरीदने का कारोबार बहुत जटिल होता है, उसमें बहुत धोखाधड़ी भी होती है तथा कइयों के पैसे बर्बाद हो जाते हैं। लौकिक दुनिया की अदालतों में जितने भी मुकद्दमे लंबित हैं, उसमें से 60 केस स्थूल संपत्ति खरीदने के संबंध में हैं। अपने यज्ञ में ईश्वरीय सेवार्थ बहुत सी संपत्तियाँ खरीदी गई हैं परंतु किसी में भी कानूनी समस्या उत्पन्न नहीं हुई। इसका कारण यही है कि बाबा ने खुद की कार्यपद्धति की जो विधि मुझे बताई है, मैं उसका पालन करता हूँ। परिणामरूप उस संपत्ति का वर्तमान और भविष्य मेरे सामने आ जाता है और संपत्ति खरीदने या सौगात के रूप में स्वीकार करने में कोई भी समस्या उत्पन्न नहीं होती।

परमात्मा द्वारा सिखाई गई इस विधि प्रमाण मैं सन् 1969 से ट्रस्ट का कारोबार करता आया हूँ और पहली स्थूल संपत्ति माउंट आबू में नक्की लेक के नजदीक 'विश्व नवनिर्माण आध्यात्मिक संग्रहालय' खरीद किया और तब से लेकर अब तक कितनी स्थूल संपत्ति यज्ञ की भगिनी संस्थाओं के नाम पर देश-विदेश में खरीद की गई हैं। यह विधि सिर्फ मकान या संपत्ति खरीदने में ही काम नहीं आती बल्कि ईश्वरीय सेवा के अनेक प्रकार के कारोबार में भी मददगार बनती है। मेरी मान्यता है कि इस विधि के कारण ही मुझे यज्ञ कारोबार में सफलता मिलती है। जैसे साइकिल सीखना हो या मोटर ड्राइविंग सीखना हो तो शुरू में कितनी मेहनत करनी पड़ती, बाद में कितना सहज हो जाता है और चलाते समय किसी भी प्रकार का तनाव नहीं होता। उसी प्रकार से शुरू में तो इस विशेष विधि को आत्मसात् करने में मुझे पुरुषार्थ करना पड़ा परंतु धीरे-धीरे अनुभव तथा पुरुषार्थ के आधार पर यह विधि सहज बन गई और यह जैसे कि वरदान रूप में एक जादुई चिराग बनकर यज्ञ के विविध कारोबार में मेरी सहायक है।

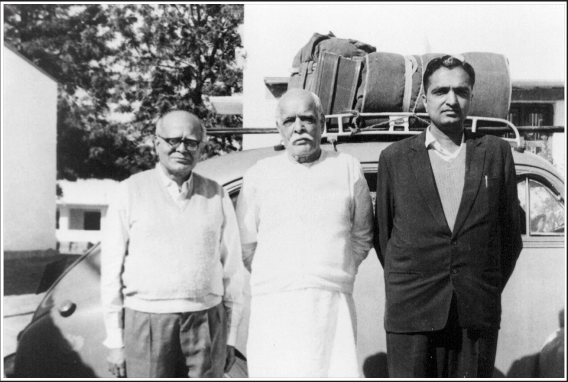

ब्रह्मा बाबा एवं दादा विश्व किशोर के साथ रमेश भाई

विज्ञान का एक अद्भुत सिद्धांत है कि अगर एक वैज्ञानिक को एक प्रयोग में सफलता मिल गई तो अन्य वैज्ञानिक को उसी प्रकार का प्रयोग करने पर उतनी ही सफलता मिल सकती है। अगर हमारे दैवी परिवार के बहन-भाई परमात्मा द्वारा सिखाई गई इस कार्यपद्धति को अपना लें तो उन्हें भी सौ प्रतिशत सफलता मिल सकती है, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

ज्ञान का अर्थ ही है समझ और इस समझ के आधार पर किया हुआ कर्म अवश्य ही सफलता दिलाता है। मिसाल के तौर पर हमारे पुरुषार्थ में तीव्रता लाने के लिए ब्रह्मा बाबा ने हमारी आदरणीया नलिनी बहन का चित्र छपवाया और उसके द्वारा तीन बातें सिखाईं। इस चित्र का जिक्र साकार मुरली में कई बार आता है। अब ब्रह्मा बाबा ने तो यह विधि बताई परंतु हम उस विधि के आधार पर कारोबार नहीं करते तो परिणामरूप उस चित्र में बताई गई बातों का लाभ नहीं ले सकते। कई बार हम बच्चों से छोटी-मोटी गलतियाँ भी हो जाती हैं और हम देह-भान में भी आ जाते हैं। इस बार की अव्यक्त मुरली में बाबा को कहना पड़ा कि मैं कोई नया वायदा बच्चों से नहीं कराऊँगा क्योंकि पहले से ही वायदों की लंबी-चौड़ी फाइल मेरे पास है। बच्चे वायदे करने में होशियार हैं और लंबे-चौड़े वायदे करके बाबा को खुश कर देते हैं परंतु निभाने का कर्त्तव्य बहुत कम करते हैं।

ब्रह्मा बाबा साकार और अव्यक्त मुरलियों द्वारा श्रेष्ठ जीवन जीने की कला हमें सिखाते हैं। हम रोज़ सुनते हैं परंतु धारण करने में नंबरवार बन जाते हैं। ज्ञान तो सबको एक समान मिलता है परंतु पुरुषार्थ एक समान नहीं होता। इसलिए ही अव्यक्त बापदादा को मुरली में कहना पड़ा कि बाप नंबर नहीं देता है परंतु बच्चे अपने पुरुषार्थ के आधार पर आगे-पीछे का नंबर ले लेते हैं।

हमारे आदरणीय जगदीश भाई हमेशा ही एक स्लोगन इस्तेमाल करते थे, अब नहीं तो कब नहीं। आदरणीया मातेश्वरी जी भी कहते थे कि कल-कल करते काल खा न जाये अर्थात् समय की सावधानी और सूचना सबको मिलती रहती है और अभी तो मैक्सिको के मायन लोगों की मान्यता अनुसार विनाश नज़दीक है। समय की सावधानी मिलते हुए भी हम बच्चे परमात्मा द्वारा सिखाई गई कार्यपद्धति और कार्यप्रणाली को जीवन में धारण नहीं करते और इसलिए ही अव्यक्त मुरली में कहा गया है कि अंतिम परीक्षा सेकंड की होगी। एक सेकंड की परीक्षा में जो पास होगा, वह चिन्दीधारी बनेगा, अन्य सभी बिन्दीधारी बनेंगे और साथ-साथ यह भी कहा गया है कि बहुत समय का अभ्यास ही सतयुग में बहुत समय का राज्य-कारोबार करने में मददगार होगा। इसलिए मेरी हमारे दैवी परिवार के सदस्यों से नम्र विनती है कि परमात्मा ने ईश्वरीय ज्ञान द्वारा जो भी युक्तियाँ या कार्यपद्धति वरदान के रूप में हमें सिखाई हैं, उन्हें योग द्वारा आत्मसात् करके अपने जीवन में लायें। अव्यक्त मुरलियों में हमारे पुरुषार्थ की गति को तीव्र अर्थात् उड़ती कला का बनाने की श्रीमत मिलती है। उड़ती कला का पुरुषार्थ करना बहुत सहज है। परमात्मा द्वारा सिखाई गई विभिन्न विधियों को जीवन में धारण किये बिना ही हम समझते हैं कि पुरुषार्थ में तीव्रता आ जायेगी और परिणामरूप चाहते हुए भी उड़ती कला के पुरुषार्थ के बदले दौड़ती कला का भी नहीं सिर्फ चढ़ती कला का ही पुरुषार्थ होता। अगर उड़ती कला का पुरुषार्थ नहीं करेंगे तो समय पर या समय से पहले लक्ष्य तक नहीं पहुँच पायेंगे। ❖

शिव शक्ति कौन?

ब्रह्माकुमारी नीता, दिल्ली (दिलशाद गार्डन)

घोर कलियुग रूपी रात्रि, चारों तरफ अज्ञान का अंधकार, ऐसे समय पर अखण्ड महाज्योति का इस धरा पर अवतरण हुआ जिन्हें कहते हैं शिव परमात्मा। परमात्मा पिता ने अवतरित होकर अज्ञान अंधकार को मिटाने तथा विकारों रूपी विष को खत्म करने के लिए नारी जाति को अपना सहयोगी बनाया। वह कमजोर पक्ष जो बिना किसी सहारे के समाज में रह नहीं सकता, उसकी तमाम सुषुप्त शक्तियों को उजागर कर विश्व के नवनिर्माण के कार्य में लगा दिया।

आज का समाज कहता है, स्त्री को पिता, पति, पुत्र के सहारे की जरूरत होती है लेकिन सिर्फ और सिर्फ शिव निराकार को ही अपना सब कुछ मानकर, शिवशक्ति रूप बनकर नारी ने संसार से तमाम बुराइयों को विनाश करने का बीड़ा उठाया। ऐसी नारी को ही कहा गया, शिव शक्ति। ऐसी शिव शक्ति का गायन-पूजन महाकाली, दुर्गा, शेरावाली आदि के रूप में होता है। इन शिव शक्तियों के साथ कभी किसी देवता को नहीं दिखाया जाता। जहाँ पवित्रता की शक्ति आ जाती है वहाँ किसी सहारे की जरूरत नहीं होती है। हर देवता के साथ एक देवी जरूर होती है लेकिन इन असुर संहारणियों के साथ कोई देवता नहीं क्योंकि शिव शक्ति ने निराकार शिव परमात्मा (जो आँखों से दिखाई नहीं देते पर हैं सर्वशक्तिमान) को मन-बुद्धि से साथ लेकर मानव मन में बैठे उन असुरों को खत्म कर डाला जिनसे समाज में इतना अत्याचार बढ़ चुका है। वास्तव में, बुराई के प्रतीक असुरों को खत्म करना, यही है शिव शक्ति का काम। ❖

बाबा बगैर मैं नहीं रह सकता

● ब्रह्माकुमार गोपाल, दिल्ली (पांडव भवन)

लौकिक रीति से हम गाजियाबाद के रहने वाले थे, परिवार वाले बहुत भक्ति करते थे। बचपन से ही मुझे भक्ति अच्छी नहीं लगती थी। सुबह-शाम जब पूजा-पाठ, आरती होती तो मैं घर से बाहर चला जाता था, मुझे ऐसा लगता था कि घर में कोई कोहराम मच रहा है। छह बहनों का इकलौता भाई होने के कारण पिताजी के मन में आता था कि कहीं भक्ति के तिरस्कार के कारण भगवान इसे श्राप न दे दें। परंतु भक्ति तो क्या, मुझे तो मंदिर जाना भी अच्छा नहीं लगता था।

घर में ही ब्रह्माकुमारीज़ पाठशाला खुल गई

बाद में मैं बैंगलोर में पढ़ा। बी.ई. मैकेनिकल किया। बैंगलोर में मैं 6 साल रहा। इस दौरान बड़ा खुश रहा इसलिए कि पूजा-पाठ के लिए पीछे पड़ने वाला कोई नहीं था। सन् 1966 में हमारे पिताजी की सेवा जयपुर में थी। जब मैं वहाँ आया तो घर में ब्रह्माकुमारीज़ की गीता पाठशाला खुली हुई थी। बड़ा मकान था। हॉल में घुसते ही शिव, शंकर आदि के चित्र लगे थे। मैंने कहा कि यह तो घर में ही मंदिर आ गया, मैं तो मंदिर से दूर रहना चाहता था। मैंने पूछा, तो कहा, यह ब्रह्माकुमारीज़ की पढ़ाई है। यह सुनते ही झगड़ा हो गया और मैंने वहाँ रहने से मना कर दिया।

चित्र फाड़कर फेंक दिये

मुझे 20 दिन बाद अमेरिका जाना था, उन दिनों अमेरिका जाना बड़ी बात मानी जाती थी। चाचाजी न्यूयार्क यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर थे। पिछले तीन साल से अमेरिका जाने के पुरुषार्थ में लगा था, जाने का शौक भी था, टिकट भी आ गई थी। घर का धार्मिक माहौल देखकर मैंने कहा, मैं दिल्ली चला जाता हूँ, वहाँ से ही फ्लाइट पकड़ लूंगा। घर वालों ने कहा, घर में तो घुसो। किचन के पास वाले कमरे में भी ज्ञान के चित्र थे। आगे मेरा कमरा था, उसमें भी झाड़ और त्रिमूर्ति के चित्र लगे थे। मैंने पूछा तो कहा, तुम्हें ये सब चित्र समझायेंगे। मुझे बहुत गुस्सा आया और चित्र फाड़कर फेंक दिये।

आबू जाने का कार्यक्रम बना

इसके बाद मैं घर से बाहर चला गया। होटल में खाना खाया। माता-पिता ने मुझे कहा, तुम माउंट आबू चले जाओ, वहाँ हमारा बड़ा आश्रम है। उन दिनों जयपुर में बड़ी गर्मी थी। मैंने सोचा, चलो 10-12 दिन बाद तो अमेरिका जाना ही है इसलिए आबू हो आता हूँ। एक बहन (मेरे बैंगलोर प्रवास के दौरान) हमारे यहाँ क्लास

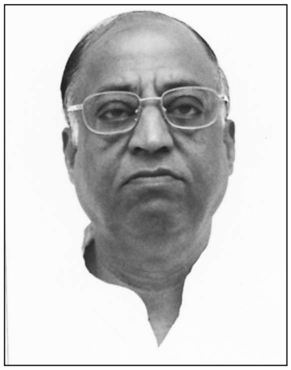

कराने आती थी, उसके साथ आबू जाना था। प्लेटफार्म पर पहुँचा तो वहाँ कोई बहन नहीं मिली। मैं ट्रेन में चढ़ गया। जहाँ मैं चढ़ा, वहाँ वह बहन, ग्रुप के साथ पहले से ही बैठी थी। उन लोगों के पास फल की टोकरियाँ, बाल्टियां आदि बहुत सामान था। मैंने बड़े रूखेपन से कहा, आप लोगों ने क्या ट्रेन खरीद ली है, और फिर उनका सामान हटाकर खुद ऊपर बर्थ पर जाकर सो गया। इतने में मैंने सुना, वे कह रहे थे, गुप्ता जी का लड़का गोपाल अभी तक नहीं आया। (बहनजी मुझे पहचानती नहीं थी, उसे मात्र इतनी जानकारी थी कि मैं भी आबू उनके साथ जाने वाला हूँ, मैं भी बहनजी को पहचानता नहीं था) जब सुना तो सोचा, ये तो मेरी ही बात कर रहे हैं। फिर मैंने ऊपर की बर्थ से ही कहा, मैं ही गोपाल हूँ।

कायदे-कानून से पूर्ण अनभिज्ञ

मैं बिल्कुल नया था, कायदे-

कानून से अनभिज्ञ, आबू मात्र घूमने और गर्मी से बचने के उद्देश्य से जा रहा था। आबू रोड स्टेशन पर जब ट्रेन रुकी तो मैंने बहनजी से चाय और चाट लेने के लिए पूछा, बहनजी ने मना किया। मैंने सोचा, शायद स्नान करके खाते होंगे। आबू पहुँचते ही मैंने पूछा, पिक्चर हाऊस कहाँ है? मुझे बताया गया कि यहाँ ऐसा कुछ नहीं है। मैंने सोचा, मेरा समय यहाँ कैसे बीतेगा, यहाँ रहकर क्या करूँगा और मैंने वापस लौटने का विचार बहनजी को सुना दिया। बहन ने कहा, आप बाबा से मिलकर जाओ। मैंने सोचा, इनका कोई गुरु होगा अत: कह दिया, मुझे नहीं मिलना। बहन ने फिर कहा, परसों ही बाबा से मिलने का हमारा टर्न है। मैंने सोचा, चलो एक दिन और इस जेल में रह लेता हूँ। मुझे मुरली के बारे में कुछ पता नहीं था, सुबह उठते ही बाहर घूमने चला जाता था, इस कारण किसी चीज़ के प्रति आकर्षण पैदा हुआ ही नहीं था।

बाबा के प्रश्न अजीब लगे

उस दिन सुबह 10 बजे ब्रह्मा बाबा से मिलना था। बाबा ज़मीन पर बिछी गद्दी पर बैठे थे। जून के महीने में 40-50 बहन-भाई ही वहाँ थे। हम थोड़ा पीछे बैठे थे, माइक था नहीं, बाबा के महावाक्य समझ में नहीं आ रहे थे। जब बहनें-भाई बाबा के नजदीक आते, बाबा पूछते, तुम्हारे कितने बाप हैं? कोई कहता, दो बाप हैं, कोई कहता, तीन बाप हैं। फिर बाबा पूछते, पहले कब मिले हो? कोई का उत्तर होता, 5000 साल पहले। फिर बाबा पूछते, कितने बच्चे हैं, एक ने कहा, शिवबाबा बाप भी है तो बच्चा भी है। मुझे बड़ी अटपटी बातें लगीं। मैंने सोचा, जल्दी से बाबा से मिलकर वापस चला जाऊंगा।

अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति

जब मैं बाबा के सामने आया, तो बाबा ने बहनजी से पूछा, यह कौन है। बहनजी ने बताया, गुप्ताजी का बेटा है। फिर बाबा ने पूछा, साप्ताहिक कोर्स किया है? बहनजी ने कहा, घर में ही सारा दिन ज्ञान चलता है। मैंने कहा, बाबा, मैं अभी नया आया हूँ, मुझे दिल्ली जाने की जल्दी है। बाबा ने कहा, बाबा गोद में नहीं लेंगे, हैंडशेक करेंगे। मैं समझ गया कि मैं उस लायक नहीं हूँ। फिर मैंने सोचा, मैं तो बाबा से मिलना ही नहीं चाहता था, जबर्दस्ती मुझे लाया गया है। अब जब आ ही गया हूँ और बाबा गोद नहीं लेंगे तो ये 40-50 लोग क्या कहेंगे, यह तो बड़ा अपमान हो जायेगा मेरा। फिर मेरे मन में आया, बाबा तो बहुत नम्र हैं, मैं बाबा से गले मिलूँगा तो बाबा दूर थोड़े ही हटायेंगे। मैं साइड में हुआ और बाबा के गले लग गया। मैं 19 साल का था। मुझे ऐसे अतीन्द्रिय सुख का अनुभव हुआ, जो लगा कि इस बाबा के बगैर तो मैं रह नहीं सकता। यदि अमेरिका गया तो एक साल में आऊंगा, पर इस बाबा के बगैर तो वहाँ रह ही नहीं पाऊँगा। इसलिए मैं तो यही रहूंगा। उसी समय निश्चय किया कि मैं अमेरिका नहीं जाऊँगा और न ही गया।

ब्रह्मा बाबा को भुलाए नहीं भूल पा रहा था

एक भाई को कहा गया कि इसे दिल्ली जाने की जल्दी है अत: बस स्टैंड पर छोड़ आना। पर मैंने कहा, मुझे नहीं जाना। मुझे तो देह का होश ही नहीं था। आँखें भर आई थी। मैं बाबा को देखता ही रहा। फिर एक भाई से पूछा, यह किस प्रकार का ज्ञान है? उसने कहा, राजसिक, तामसिक भोजन नहीं खाना, अश्लीलता से दूर रहना, पवित्र रहना है, इसके लिए तैयार हो? मैंने सोचा, यहाँ का सात्विक खाना तो बहुत अच्छा है और पवित्र रहना भी अच्छा है। मुझे कोई मुश्किल बात नहीं लगी। फिर मुझे आत्मा के पाठ पर समझाया गया। ब्रह्मा के तन में शिवबाबा आते हैं, यह भी बताया गया। ब्रह्मा बाबा को तो भुलाए नहीं भूल पा रहा था।

बस, बाबा को देखता रहा

मैंने पूछा, बाबा कहाँ रहते हैं? मुझे स्थान बताया गया और मैं बाबा के पास चला गया। देखते ही बाबा ने कहा, आओ बच्चे। मैं बैठ गया। बाबा

सूप पी रहे थे। बाबा ने मुझे भी पिलाया। मैं अपने कमरे में लौट आया पर थोड़े समय बाद फिर मन नहीं लगा तो बाबा से मिलने पुनः पहुँच गया। बड़ी दीदी ने मुझे रोका। मैंने बाबा से कह दिया, बाबा, एक माताजी मुझे रोक रही थी। बाबा ने लच्छू दादी को बुलाया और कहा, दीदी को बुलाओ। दीदी के आते ही मैंने कहा, हाँ, यही माताजी रोक रही थी। बाबा ने कहा, यह बच्चा बाबा से मिलने आ सकता है। दीदी ने कहा, अभी तो होकर गया है, फिर आ गया 10 मिनट बाद। मुझे लगा कि यही मौका है सारी बात कर लूं। मैंने पूछा, बाबा, रात के दो बजे भी आ सकता हूँ? बाबा ने कहा, हाँ, आ सकते हो। मैंने कहा, बाबा, आप किसी से मिल रहे हो तो भी आ सकता हूँ? बाबा ने दीदी को कहा, हाँ, यह बच्चा आ सकता है, यह छोटा बच्चा है, कोई बात नहीं। अगले दिन मुरली क्लास में नहा-धोकर पहुँच गया। मुरली समझ नहीं आई, बस बाबा को देखता रहा।

बाबा ने घुमाया सारे विश्व में

फिर मैं घर लौटा, पिताजी को बताया कि मैं अमेरिका नहीं जा रहा हूँ। जब लौकिक चाचा को पता चला तो उसने समझा, इसका दिमाग खराब हो गया है इसलिए कहा, इसे आगरा के मेन्टल हॉस्पिटल में दिखाओ और पिताजी को कहा, मैं अमेरिका से इसे लेने आ रहा हूँ। मैंने पिताजी को कहा, चाचाजी को समझा दो, मैं अमेरिका नहीं जाऊँगा। मैं दो महीने बाद जयपुर के किशनपोल बाजार म्यूजियम पर चला गया। तब से आज तक मैं सेन्टर पर ही रहा हूँ। मैं बाबा के अव्यक्त होने (1966 से 1969) तक 3 साल में 33 बार मधुबन आया, बाबा के साथ कैरम खेला, बैडमिन्टन खेला, बहुत पालना ली। बाबा ने 18 जनवरी, 1969 को शरीर छोड़ा तो मैं बहुत रोया, तीन दिनों तक रोता ही रहा, मन उदास था कि पता नहीं अब क्या होगा। मुरली कौन चलायेगा, मधुबन में अब हम क्यों आयेंगे, बाबा तो चला गया। फिर शिवबाबा 21 जनवरी, 1969 शाम को गुलजार दादी के तन में आये और मुरली चलाई, उस समय बहुत पावरफुल वातावरण था। मुरली क्या चलाई मानो एक जादू की छड़ी बाबा ने घुमाई जिससे सभी के मन के प्रश्न खत्म हो गये और यज्ञ में फिर से वही उमंग-उत्साह भर गया। बाबा ने अमेरिका जाने की मेरी इच्छा बाद में कई गुणा पूरी की। न केवल अमेरिका बल्कि सारे विश्व में मुझे घुमाया। ❖

ज्ञानामृत के सर्व पाठकों को नव वर्ष की कोटि-कोटि शुभ बधाइयाँ

नया साल

सत्यनारायण 'सत्य', रायपुर (भीलवाड़ा)

नया साल, नई उमंगें,
जगा नया विश्वास
नया साल फिर ले आया है,
एक नया अहसास।

बीते समय की बात छोड़ दें,
बुराइयों से नाता तोड़ लें।
घिसी-पिटी ना रहे ज़िन्दगी,
इसको भी इक नया मोड़ दें।
प्रेम-दया की शुद्ध हवा में,
ले पाएँ सब सुख की सांस।
नया साल फिर ....

नई राह पर चलना सीखें,
बंधन-विघ्न कुचलना सीखें।
हिम्मत की फिर गाँठ बाँध कर,
दुख और दर्द मसलना सीखें।
भाईचारे का ले संदेशा,
जाएँ सबके पास।
नया साल फिर ....

आपस की दूरी मिट जाए,
हर इक मजबूरी मिट जाए।
प्यार पले सबके दिल में,
चाह अधूरी भी मिट जाए।
सुखमय हो जीवन सारा,
आम रहे ना कोई खास।
नया साल फिर ....

ग्लोबल हॉस्पिटल की स्वास्थ्य सेवाओं के बीस वर्ष

● **डॉ.प्रताप मिड्ढा, निदेशक, ग्लोबल हॉस्पिटल**

सन् 1991 से 2011 तक का ग्लोबल हॉस्पिटल की स्वास्थ्य सेवाओं का सफर स्वास्थ्य चेतना व उपलब्धियों को लिये हुए है। राजस्थान के स्वास्थ्य मंत्री एमादुद्दीन अहमद ने 9 नवंबर को ग्लोबल अस्पताल एवं अनुसंधान केन्द्र के 20 वर्ष पूरे होने पर आयोजित कार्यक्रम में ग्लोबल अस्पताल की सेवाओं पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि रोगियों को अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करने में यहाँ के चिकित्सकों व सेवाभावी स्टाफ ने अहम भूमिका निभाई है।

दादी जानकी जी ने इन 20 वर्षों की स्वास्थ्य सेवाओं को 'प्रेमपूर्ण सेवा (Serving with love)' बताते हुए कहा कि यह अस्पताल गाँव गाँव में हजारों लोगों तक पहुँचकर उन्हें नवजीवन प्रदान कर रहा है। मैनेजिंग ट्रस्टी बी.के.निर्वैर, ट्रस्टी डॉ.अशोक मेहता व समस्त ट्रस्टियों के मार्गदर्शन से ग्लोबल हॉस्पिटल निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है।

ग्लोबल हॉस्पिटल द्वारा 1991-2011 तक प्रदान की गई प्रमुख स्वास्थ्य सेवायें :-

- 17 लाख से अधिक रोगियों को नि:शुल्क परामर्श
- 47,000 रोगियों को अस्पताल में भर्ती कर इलाज
- 31,000 से अधिक रोगियों को ऑप्रेशन सुविधा
- लगभग 60 सोनोग्राफी व 40 एक्सरे नि:शुल्क
- 70 से 80 के बीच नि:शुल्क स्वास्थ्य सेवायें
- 30 से 50 तक रियायती दरों पर स्वास्थ्य सेवायें
- अतिविशिष्ट सुपर स्पेशलिस्टी सेवाओं के अंतर्गत घुटनों व कुल्हों के जोड़ प्रत्यारोपण सर्जरी, यूरोलॉजी, बच्चों की सर्जरी (Paediatric), प्लास्टिक सर्जरी, न्यूरोलॉजी, हेड व नेक कैंसर सर्जरी, ओर्थोडेनटिस्ट, पैरीडोटिस्ट तथा कार्डियालोजी सुविधा। 2006 से अब तक बच्चों की कटे होंठ व तालु की नि:शुल्क 2898 प्लास्टिक सर्जरी की जा चुकी हैं। ये ऑप्रेशन अमेरिका की स्माइल ट्रेन संस्था के सहयोग से किये जा रहे हैं।
- प्रतिवर्ष लगभग 3800 मोतियाबिन्द की सर्जरी, जिसमें 60 से अधिक नि:शुल्क ऑप्रेशन। अति विशिष्ट सेवाओं में बच्चों के नेत्र ऑप्रेशन व रेटिना संबंधी सर्जरी।
- 76 से भी अधिक आदिवासी ग्रामीण क्षेत्रों में उनके घरों तक पहुँचकर नि:शुल्क स्वास्थ्य जाँच मोबाइल वैन द्वारा प्रदान की जा रही है।
- ग्रामीणों के स्वास्थ्य व विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अंतर्गत 800 से अधिक लड़कियों को सिलाई व कढ़ाई का प्रशिक्षण प्रदान किया गया।
- आंगनवाड़ी चेतना कार्यक्रमों के अंतर्गत पिछले एक वर्ष में 465 नवजात शिशुओं की नि:शुल्क जाँच की गई।
- 16 विद्यालयों में चल रहे 'स्वास्थ्य व पोषण' कार्यक्रम में 2500 से अधिक विद्यार्थियों ने लाभ प्राप्त किया।
- राजस्थान सरकार के सहयोग से 36 गाँवों में ग्लोबल हॉस्पिटल के स्वास्थ्यकर्त्ताओं द्वारा घर-घर जाकर टीबी के रोगियों को पोषक आहार भी प्रदान किया जा रहा है।
- **ग्लोबल हॉस्पिटल ट्रोमा सेन्टर, आबू रोड** ने अपनी सेवाओं के शुरूआती वर्ष 2007 से अब तक एक लाख रोगियों को नि:शुल्क परामर्श तथा 4,251 रोगियों का भर्ती कर इलाज किया है। 2,251 से अधिक रोगियों का आपातकालीन परिस्थितियों में इलाज तथा 1500 से अधिक ऑप्रेशन सुविधायें प्रदान की गई। ब्लड बैंक द्वारा 3,364 ब्लड बैग्स इलाज के लिए उपयोग में लाये गये।

ग्लोबल हॉस्पिटल माउंट आबू की सेवाओं से संलग्न शाखायें जी.वी.मोदी हेल्थ केयर सेन्टर, पी.सी.परमार आई केयर सेन्टर, ग्लोबल हॉस्पिटल नेत्र संस्थान व राधामोहन मेहरोत्रा ग्लोबल हॉस्पिटल ट्रोमा सेन्टर सभी सेवासंस्थानों ने मिलकर ग्लोबल हॉस्पिटल की स्वास्थ्य सेवाओं को नई प्रगति व जागरूकता प्रदान की है।

संपर्क करें:- डॉ.बिन्नी, फोन: 02974-238347/48, ghrcabu@gmail.com

बाबा की गोद में हुआ अलौकिक जन्म

● **ब्रह्माकुमारी शीलू, आबू पर्वत**

मुझ आत्मा का बहुत बड़ा सौभाग्य रहा कि साकार में ब्रह्मा बाप की साकार पालना प्राप्त हुई। मुझे नशा है कि मेरा अलौकिक जन्म ब्रह्मा बाबा की गोद में हुआ। जब मैं 12 वर्ष (दिसंबर 1959) की थी तब मेरी लौकिक माता जी मुझे बाबा से मिलाने ले गई। वे पिछले कुछ दिनों से ज्ञान में चल रही थी और मुंबई की एक ब्रह्माकुमारी पाठशाला में मुझे भी ले जाया करती थी। मुझे इतना ध्यान नहीं था कि यहाँ क्या बताया जाता है, बस, बैठ जाती थी मुरली क्लास में और देखती रहती थी।

माताजी को मिला ब्रह्मा भोजन का निमंत्रण

चूँकि आबू में बहुत ठण्डी होती थी इसलिए दिसंबर, जनवरी, फरवरी – ठण्डी के इन तीन महीनों में बाबा मुंबई में रहते थे। एक फ्लैट या मकान बाबा के लिए लिया जाता था और सब तरफ से दादियाँ भी वहाँ पहुँच जाती थीं। बाबा, बीच-बीच में ब्रह्मा भोजन के कार्यक्रम रखते थे और कुछ विशेष आत्माओं को आमंत्रण देते थे। मेरी लौकिक माताजी को भी बाबा की तरफ से ब्रह्मा भोजन का निमंत्रण मिला।

बाबा एक-एक को गिट्टी खिलाते थे

बाबा के साथ ब्रह्मा भोजन करना बहुत बड़ा सौभाग्य था। बाबा हॉल में बच्चों के साथ ब्रह्मा भोजन स्वीकार करते थे। लगभग 25-30 तक ही भाई-बहनें होते थे। सभी चोरस रूप में बैठते थे। बाबा सामने बैठते थे। बहनें परोसती जाती थी और बाबा एक-एक बच्चे को बुलाते थे। पहले वह बाबा से दृष्टि लेता था, फिर बाबा की गोद में जाता था, बाबा उसकी पीठ थपथपाते थे, फिर बाबा कुछ न कुछ वरदान देते थे। फिर एक-एक के मुख में, गिट्टी खिलाते थे। फिर वह अपने स्थान पर जाकर बैठता था, फिर दूसरा जाता था। इस प्रकार, बाबा की गोद में सभी के जा लेने के बाद ही ब्रह्मा भोजन शुरू होता था।

मैंने समझा, माताजी के गुरु हैं

मेरी लौकिक माता जी मुझे ब्रह्मा भोजन के लिए बाबा के पास ले गई थी। मैंने देखा, सभी बाबा की गोद में जा रहे हैं, जब मेरी बारी आई तो मुझे थोड़ा संकोच हुआ कि कैसे जाऊँ, कौन है बाबा, कारण कि बहुत कम संपर्क में आई थी। मैं तो इसी सोच में थी कि ये मेरी लौकिक माता के कोई गुरु हैं।

बाबा ने देखा, बच्ची संकोच कर रही है तो बाबा ने ही बुलाया, आओ बच्ची, आओ बच्ची, तो जैसे चुंबक, सूई को अपनी ओर खींच लेता है, इस प्रकार का मुझे अनुभव हुआ। मैं दौड़कर बाबा की गोद में गई। सिर बाबा की गोद में था, बाबा ने पीठ थपथपाकर कहा, बच्ची, अपने पिता के पास वापस आ गई। यह वरदान बाबा ने दिया। मुझे ऐसा अहसास हुआ जैसे कि मेरा नया जन्म हुआ।

माताजी को हुआ था ब्रह्मा बाबा का साक्षात्कार

क्यों ऐसा अहसास हुआ? क्योंकि जब मेरा यह शरीर मात्र तीन दिन का था, तब लौकिक पिता ने एक दुर्घटना में देह त्याग दिया था। मैंने लौकिक पिता को देखा नहीं और उन्होंने भी मुझे नहीं देखा। वे बाहर थे और मुंबई आते रास्ते में ही दुर्घटना घट गई थी। जब बड़ी हुई और इस दुर्घटना के बारे में पता चला तो मन में खटकता था कि मेरे ऐसे क्या कर्म हैं जो मैंने पिता को नहीं देखा। मेरे जन्म के तीसरे दिन एक बहुत ही सुन्दर तथा अद्भुत घटना यह घटी थी कि माता जी को

ब्रह्मा बाबा का साक्षात्कार हुआ था। उस समय उन्हें ईश्वरीय ज्ञान का परिचय नहीं था। उस दिन सवेरे-सवेरे एक फ़रिश्ता उनके सामने आकर खड़ा हुआ, उसने अपने दोनों हाथ पसारे हुए थे (जैसा कि ब्रह्मा बाबा का भी एक चित्र है, बच्चों का आह्वान करते हुए)। फ़रिश्ता बोला, यह बच्ची मेरी है, मुझे दे दो, मैं इसका पिता हूँ। मेरी लौकिक माता देखती रही, यह कौन है, लाइट में फ़रिश्ता, बुजुर्ग-सा। बहुत चमक थी उनके चेहरे पर। माताजी सोचने लगी, मैं पिता हूँ, यह कैसे कह रहे हैं, लेकिन उनको भी बहुत आकर्षण हुआ, उन्होंने मुझे उठाकर उस फ़रिश्ते को दे दिया और एक सेकंड में देखा कि वह गायब हो गया। माताजी अपने आप में जागृत हुई तो देखा, बच्ची (मैं) तो वहीं थी, कोई गायब थोड़े ही हो गई थी परंतु उसके मन में सदा यह प्रश्न रहता था कि यह कौन मेरे सपने में या साक्षात्कार में आया और ऐसे कैसे कह दिया कि मैं इसका पिता हूँ। लेकिन उसने यह किसी से कहा नहीं। उसी दिन शाम को लौकिक पिता के देह-त्याग का समाचार माँ ने सुना तो जैसे, बाबा ने पहले से ही मेरी लौकिक माँ को इस आकस्मिक परिस्थिति के लिए तैयार कर दिया। मैं पहली संतान थी। माता जी की आयु लगभग 18 वर्ष थी। मेरा अलौकिक जन्म तो उसी समय हो गया था।

एक में तीन की अनुभूति

तो जब मैं बाबा की गोद में गई तो मुझे लगा, यही मेरे अलौकिक पिता हैं। इस प्रकार ब्रह्मा बाबा में ही मैंने लौकिक और पारलौकिक दोनों पिताओं को देखा। दूसरे शब्दों में, एक ब्रह्मा बाबा में ही तीनों पिताओं की अनुभूति की।

विदेश जाने का वरदान मिला

सन् 1959-60 में, हम जितनी भी ज्ञान में चलने वाली कन्यायें थीं, सबको बाबा ने निमंत्रण दिया था। बाबा कन्याओं को देखकर बहुत खुश होते थे, कहते थे, ये मेरी कन्यायें विश्व की सेवा करेंगी, बाबा का नाम बाला करेंगी। उस समय मैं मुंबई के नामीगिरामी इंग्लिश मीडियम स्कूल में पढ़ती थी, इसलिए मेरी इंग्लिश बहुत अच्छी थी। मैंने एक ज्ञान-युक्त इंग्लिश कविता बाबा के आगे सुनाई। बाबा ने उसी समय मुझे बहुत प्यार किया और कहा, बच्ची, तुम इंग्लिश में बहुत होशियार हो, बाबा तुमको विदेश भेजेगा। उस 12 साल की आयु में बाबा से यह वरदान मिला, जबकि विदेश क्या होता है, यह भी ज्ञान नहीं था। फिर तो बाबा के सामने कई बार इंग्लिश में भाषण भी किया, जैसे कि बाबा का यह वरदान हमें बचपन से ही मिल गया था।

बाबा हमेशा जीतते थे

सन् 1960 में मैं मुंबई से मधुबन गई। मधुबन में भी बाबा का बहुत प्यार मिला। उस समय मधुबन बहुत छोटा था। हिस्ट्री हॉल भी तब नहीं था। यह हॉल तो 1962 में बनकर तैयार हुआ। मधुबन में आने वाले हर बच्चे को बाबा बहुत अधिक प्यार देते थे। सारा समय बच्चों पर ही ध्यान देते थे। जो भी पार्टी आती थी, उसके लिए बाबा के अलावा अन्य कोई आकर्षण तो था ही नहीं। अमृतवेला भी बाबा कराते थे, मुरली भी बाबा चलाते थे। उसके बाद बाबा बैडमिन्टन बच्चों के साथ खेलते थे। हालाँकि हम छोटे थे पर छोटे होते भी बाबा के साथ बैडमिन्टन खेलते थे। बाबा इतने लंबे – छह फीट, बच्चे कितने छोटे लेकिन बाबा ऐसे बच्चों के साथ भी खेलते थे और बाबा ही जीतते थे। बाबा कहते थे, बच्चे, देखो, इसमें डबल इंजन है तो डबल इंजन तो बहुत शक्तिशाली होता है ना! फिर बाबा बच्चों के साथ ब्रह्मा भोजन करते थे, झूले पर बैठते थे। सब बच्चे एक-एक कर बाबा के साथ झूले पर बैठते थे। उस समय बाबा बहुत सुन्दर वरदान भी देते थे।

सबसे बड़ी तीन हस्तियाँ

मैं भी अपनी लौकिक माताजी और बाबा के साथ झूले पर बैठी, बाबा बीच में थे और हम दोनों बाजू में बैठे। बाबा ने मेरे से पूछा, बच्ची, किसके साथ झूले में झूल रही हो? मैंने बड़े नशे से जवाब दिया, बाबा के साथ, तो

बाबा ने पूछा, और किसके साथ झूल रही हो? मैंने कहा, मम्मी के साथ, तो बाबा ने बड़े प्यार से पूछा, और किसके साथ झूल रही हो? और तो कोई नहीं था, मैंने कहा, और कोई नहीं, तो बाबा ने कहा, सोचो, और किसके साथ झूल रही हो? मैंने कहा, बाबा, आप और मम्मी। बाबा ने कहा, बच्ची, जब भी आप बाबा के साथ झूले पर झूलो उस समय याद रखना कि मैं दुनिया की सबसे बड़ी तीन हस्तियों के साथ झूले पर झूल रही हूँ, एक तो है सर्व आत्माओं का पिता परम आत्मा जो इस तन में विराजमान है। दूसरा है सारी प्रजा का पिता ब्रह्मा बाबा। तीसरा है होवनहार श्रीकृष्ण, पहला देवता क्योंकि बाबा ही श्री कृष्ण बनेंगे। इस प्रकार से दुनिया की सबसे बड़ी तीन हस्तियों के साथ झूले में झूल रही हो। जैसे ही बाबा ने यह कहा, मुझे तो नशा चढ़ गया। आज भी जब कभी झूले में झूलते हैं, वो दृश्य सामने आता है कि बाबा के संग हूँ और दुनिया की सबसे बड़ी तीन हस्तियों के साथ झूले में झूल रही हूँ। इतना बाबा ने प्यार दिया।

बाबा का बहुत प्यार मिला

इस प्रकार जब भी बाबा मिलते, कुछ न कुछ वरदान देते ही थे। वो जो पालना हमने प्राप्त की, वो कैसे भूल सकते हैं। मधुबन में दस दिन रहे, बाबा का बहुत प्यार मिला। जाने के दिन बाबा बच्चों को बहुत सुन्दर ढंग से विदाई देते थे। पांडव भवन के पीछे के रास्ते से पेड़ तक बाबा आते थे। सामान बैलगाड़ी से जाता था और हम बस स्टैण्ड तक पैदल जाते थे। वहाँ से बस लेते और नीचे आबू रोड आते थे। विदाई से पहले बाबा सबको सौगात देते थे। बाबा अलग से सौगात देते थे और मम्मा अलग से सौगात देती थी। मम्मा अलग से मिलती थी, बाबा अलग से मिलते थे, कभी पार्टी से दोनों इकट्ठे भी मिलते थे।

मुंबई लौटने की दिल नहीं हुई

बाबा का इतना प्यार पाकर मुंबई जाने की दिल नहीं हुई। मैंने सोचा, मुझे वापस मुंबई जाना ही नहीं है, यहीं रहूँगी। जब जाने का समय आया, सब तैयार हुए, सब बाबा से छुट्टी ले रहे थे, मैं गुम हो गई। सब ढूँढने लगे, सारा मधुबन ढूँढ़ लिया, पता नहीं चला। मैं छत पर छिपकर बैठी थी ताकि कोई मुझे ढूँढे ही नहीं लेकिन मुझे ढूँढ़कर ले आए। जैसे ही बाबा के सामने गई, बाबा सब समझ गए। मैं बाबा के सामने खूब रोई, कहा, मुझे वापस मुंबई नहीं जाना, मुंबई तो मायानगरी है। मुझे यहीं रहना है। चतुर सुजान बाबा बच्चों की दिल रखते थे। बाबा ने मेरी लौकिक माताजी को कह दिया, अच्छा, ठीक है बच्ची, यह बच्ची यहीं रहेगी, बाबा इसको स्कूल में पढ़ायेंगे, आप लोग वापस मुंबई जाओ। माताजी मुझे देखने लगी कि यह 12-13 साल की लड़की यहाँ क्या रहेगी बाबा के पास, पढ़ाई कहाँ करेगी। मैं खुश हो गई कि मैं तो मधुबन में रहूँगी। फिर बाबा ने मुझे बहुत प्यार से समझाया, देखो बच्ची, तुमको तो विश्व की सेवा करनी है, यहाँ रहोगी तो यहाँ तो अच्छे स्कूल नहीं हैं। तुमको तो इंग्लिश में बहुत होशियार होना है। बाबा तुमको विदेश भेजेगा। बाबा उस समय विदेश को बहुत याद करते थे और इंग्लिश स्पीकिंग हैण्डस को उसी रूप में कहते भी थे। बाबा ने कहा, तुम मुंबई में जाकर अच्छे स्कूल में पढ़ो तो बाबा तुमको विदेश भेजेगा। जब पढ़ाई पूरी होगी तो बाबा तुमको मधुबन में बुला लेगा।

बुद्धि में बाबा के सिवाय कुछ न रहा

'बाबा बुला लेगा' यह सुन मैं बहुत खुश हो गई और खुशी-खुशी मुंबई वापस लौट गई। अब मेरी बुद्धि ऐसी हो गई थी जिसमें बाबा के सिवाय कोई नहीं था। स्कूल जाती थी तो स्कूल में भी सब मुझे मीराबाई कहकर बुलाते थे। मेरे सहपाठी होटल, पिक्चर में जाते पर मैं न्यारी रहती थी। स्कूल जाने से पहले सेन्टर पर जाना मेरा नित्य नियम था। बाबा भी कहते थे, बच्ची अच्छी तरह से पढ़ाई पढ़ो, फिर बाबा तुमसे बहुत सेवायें लेगा।

रूहानी डॉक्टर बनो

सन् 1967 में मैं कॉलेज में सेकंड इयर में थी, मेरे परिवार की तरफ से बहुत जोर था कि मैं मेडिकल साइड

लूँ, डॉक्टर बनूँ परंतु मुझे यह लगन थी कि मुझे बाबा की सेवा करनी है। मैंने बाबा को पत्र लिखा कि मेरे घरवाले ऐसा कह रहे हैं तो मैं क्या करूँ? बाबा ने मुझे पत्र लिखा कि बच्ची, बाबा की आपमें बहुत उम्मीदे हैं। बाबा तो चाहेंगे कि आप जैसी बच्चियाँ रूहानी डॉक्टर बनकर विश्व की सेवा करें, बाबा की इच्छा है कि आप रूहानी डॉक्टर बनो। यह नहीं कहा कि डॉक्टरी पढ़ाई नहीं करो।

मुझे रास्ता मिल गया

जैसे ही मुझे बाबा का पत्र मिला, मैंने निर्णय कर लिया कि मुझे डॉक्टरी नहीं पढ़नी, मुझे तो रूहानी सेवा करनी है। घरवालों की तरफ से और विघ्न आने लगे, बहुत बड़ा परिवार था। समझ में नहीं आया, क्या करूँ। उस समय डॉ. निर्मला दीदी (वर्तमान समय ज्ञानसरोवर निदेशिका) मुंबई में रहती थी, उन्होंने उस समय अपनी मेडिकल प्रैक्टिस बाबा की श्रीमत प्रमाण छोड़ दी थी। बाबा ने उनको कहा था, बच्ची, मेडिकल प्रैक्टिस छोड़कर एक मकान लो, वहाँ सेन्टर खोलो और वहाँ कुमारियों की ट्रेनिंग रखो क्योंकि कुमारियों को तैयार कराकर विश्व सेवा में भेजना है। दीदी के माता-पिता ने वर्से के रूप में कांदिवली (मुंबई) में उन्हें एक मकान दिया। उसी मकान में दीदी ने कुमारियों की ट्रेनिंग रखी। मैं भी उसमें गई और उनके सामने अपना प्रश्न रखा। उन्होंने कहा, देखो, मैं तो डॉक्टर हूँ फिर भी बाबा की श्रीमत प्रमाण यह प्रैक्टिस छोड़ बाबा की फुलटाइम सेवा में हूँ, मैं तुमको कैसे कहूँगी कि तुम डॉक्टरी पढ़ो। उनके इन शब्दों से मुझे रास्ता मिल गया कि मुझे बाबा की सेवा में ही रहना है।

समर्पित होने की लगन लगी

उन दिनों दादी प्रकाशमणि मुंबई गामदेवी सेन्टर की इंचार्ज थी, हम वहीं क्लास करने जाते थे, हमने उनसे कहा, समर्पित होना चाहती हूँ। दादी जी ने कहा, अपने घरवालों से चिट्ठी लेकर आओ, बिना चिट्ठी कैसे रखेंगे। अब चिट्ठी कहाँ से मिले, घरवाले देने को तैयार नहीं थे। लौकिक चचेरा भाई अमेरिका में था, वो लिखता था, तुम अमेरिका में आओ, हम तुम्हें यहाँ पढ़ायेंगे। मेरे मन में था कि मायानगरी अमेरिका में जाकर क्या करना है, मुझे तो बाबा की सेवा करनी है।

बाबा गए नहीं हैं

सन् 1969 में मैं कॉलेज के आखिरी वर्ष में थी। इम्तहान की तैयारियाँ चल रही थी। तभी 18 जनवरी, शनिवार को बाबा ने रात के लगभग 8.45 बजे देह-त्याग किया। दादी जी तो मधुबन में ही थे। सभी सेवाकेन्द्रों पर टेलीग्राम भेज दिया गया कि बाबा अव्यक्त हो गये हैं। जैसे ही समाचार मिला, सभी भाई-बहनों को जो भी साधन मिला, रात-भर सफर करके भी मधुबन पहुँच गए। रविवार सुबह, 19 तारीख जब मैं सेवाकेन्द्र पर गई तो देखा, वहाँ केवल दो-चार भाई-बहनें शान्ति में बैठे थे। रविवार को तो बहुत चहलपहल होती है सेन्टर पर, मुझे कुछ समझ नहीं आया कि ऐसा क्यों है क्योंकि 18 तारीख रात को क्लास करके मैं 8 बजे घर चली गई थी इसलिए मुझे कोई समाचार नहीं मिला था। मैंने सेन्टर पर एक बहन से पूछा तो उसने बड़े उदास मन से कहा, बाबा ने शरीर छोड़ा है। मैंने कहा, बाबा ने शरीर छोड़ा, ऐसा कैसे हो सकता है? उस समय मुझे इतना बड़ा शॉक लगा, मुझे लगा कि सारी धरती हिल रही है और जैसे कि आकाश फटेगा और सब कुछ नीचे आ जायेगा और मैं काँपने लगी। मुझे लगा कि बाबा गया तो अब दुनिया खत्म हो जायेगी। फिर मैंने अपने को जैसे-तैसे संभाला। मैं बाबा के चित्र के सामने गई और कहा, बाबा आप चले गए, यह कैसे हो सकता है? मैंने आपकी इच्छा तो पूरी नहीं की। आपने मेरे में इतनी ऊँची उम्मीद रखी कि बच्ची रूहानी सेवा करेगी, रूहानी डॉक्टर बनेगी, बाबा अब क्या होगा? तो जैसे-जैसे मैं बाबा से बात कर रही थी, वैसे-वैसे मुझे बाबा के अव्यक्त स्वरूप का अनुभव हो रहा था। फिर मैंने लौकिक माता को समाचार

(शेष..पृष्ठ 26 पर)

बाबा ने कहा, शेरनियाँ सामने बैठती हैं

● **ब्रह्माकुमारी सुषमा, जामनगर**

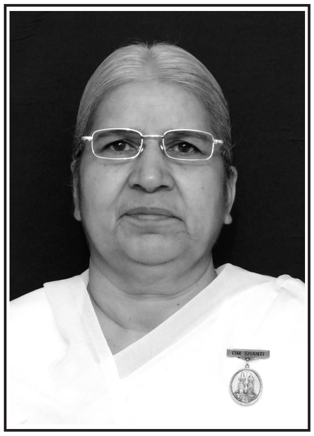

सन् 1959 में अंबाला में मेरे पिताजी के मित्र के यहाँ ब्रह्माकुमारी बहनों का सत्संग था, माता-पिता को वहीं से ज्ञान मिला। माताजी को तो तुरंत निश्चय हो गया, वे प्रतिदिन जाने लगी। माताजी पहले गुस्सा बहुत करती थी पर ज्ञान लेने से गुस्सा कम हो गया। पिताजी को थोड़ा संशय था क्योंकि उन्होंने बहुत वेद-शास्त्र पढ़े थे। उनके दांत में दर्द रहता था। संयोग ऐसा बना कि जब वे सेवाकेन्द्र पर जाते तो दांत का दर्द बंद हो जाता और बाहर आते ही पुनः शुरू हो जाता तो वे सोचते कि शायद ब्रह्माकुमारियाँ जादू करती हैं। एक बार पिताजी ने कहा कि अगर भगवान सृष्टि पर आये हैं तो जैसे अर्जुन को साक्षात्कार हुआ, वैसे मुझे हो तो मैं जानूँ। एक दिन वे सड़क पर जा रहे थे, तब उन्हें विनाश का साक्षात्कार हुआ, उनकी साक्षात्कार की इच्छा पूरी हो गई फिर नियमित जाना शुरू कर दिया। बाद में पिताजी ध्यान में भी जाने लगे। सुबह माताजी और पिताजी सेन्टर पर मुरली सुनने जाते, शाम को हमारे घर मुरली चलती। उन दिनों जो चार-पाँच चित्र निकले थे, वे सभी घर में लगाये हुए थे जिन पर, आने वालों को भी समझाते थे। हर शनिवार को दादियाँ हमारे घर आतीं और योग शुरू कराकर जातीं, सारी रात योग चलता था। उन दिनों गुरुवार और रविवार दो दिन भोग लगता था। माँ स्कूल जाने से पहले हमें पाँच मिनट योग करने के लिए कहती तथा स्कूल से आने के बाद मुरली के प्वाइंट्स सुनाती थी।

लोगों को भ्रांतियाँ थीं

हमारे मोहल्ले में संस्था का काफी विरोध था। हमारे परिवार के अन्य लोग भी बहुत विरोध करते थे। लोग कहते कि ब्रह्माकुमारियाँ जादू-टोना करती हैं, सुरमा लगाती हैं। उस समय मोहल्ले में पानी की बहुत तंगी रहती थी। शाम को घर में मुरली क्लास का और नल में पानी आने का समय एक ही होता था। कई बार ऐसा होता कि बाबा पिताजी को ध्यान में कहते, बच्चे, चिंता मत करो, तुम्हें पानी मिल जायेगा। फिर ऐसा होता कि हम पानी लेने जाते तो नल में पानी आने लगता। लोग कहते, देखो, ब्रह्माकुमारियों ने जादू किया इसलिए नल में पानी आ गया।

स्वप्न में बाबा को देखा

एक रात मुझे सपना आया कि मैं एक बहुत बड़े जंगल से गुज़र रही हूँ। मुझे डर लगा। तभी एक बाबा वहाँ पर आये जो बीच-बीच में खाँस रहे थे। उन्हें देख मैंने कहा, बाबा जी, मुझे बहुत डर लग रहा है। बाबा ने उंगली पकड़कर मुझे जंगल पार कराया। दूसरी रात को भी ऐसा ही स्वप्न आया। उस समय तक हम बच्चे ज्ञान नहीं समझे थे। मैंने ब्रह्मा बाबा का फोटो भी नहीं देखा था। जब माताजी एक प्रोग्राम में सेन्टर पर लेकर गई, वहाँ ब्रह्मा बाबा का फोटो देखा तो मैंने माताजी को स्वप्न के बारे में बताया कि ये बाबा जी तो मेरे स्वप्न में आये थे और मुझे जंगल पार कराया था। माताजी ने शुरू से ही निश्चय किया हुआ था कि मैं अपनी बेटी को मीरा ही बनाऊँगी, इसकी शादी नहीं करूँगी।

मम्मा को देखते ही शांत हो गए

जब मम्मा अंबाला आई तो 80

युगल ज्ञान में चल रहे थे। सभी धारणामूर्त और पक्के थे। मम्मा बहुत खुश हुई। मम्मा के आने का समाचार सुन कुछ लोगों ने बहुत विरोध किया। आने से पहले वे कहते थे, इनकी मम्मा को देखेंगे पर मम्मा को देखते ही शान्त हो गये। मम्मा ने मुझसे पूछा, तुम ब्रह्माकुमारी बनोगी? मैंने कहा, हाँ बनूँगी। तब मम्मा ने कहा कि अगर तुम ब्रह्माकुमारी बनोगी तो मैं सारे यज्ञ वालों को देसी घी का हलुवा खिलाऊँगी। हम चार भाई और एक बहन हैं। (एक भाई ने कुछ समय पहले शरीर छोड़ा है) मम्मा हमें बहुत अच्छी लगती थी। मम्मा जहाँ जाती, हम पाँचों भाई-बहनें उनके साथ जाते। जहाँ भी मम्मा का कार्यक्रम होता, हम बच्चों का भी कार्यक्रम होता। मम्मा भाषण करती और हम बच्चे रास-विलास करते, गीत गाते। हम मम्मा की गोदी में बैठ जाते तो कोई-कोई कहते, अरे मम्मा की गोदी में क्यों बैठे हो? हम कहते, हमारी मम्मा है, हम तो बैठेंगे।

बड़ी माँ (शिवबाबा) को याद करना

शरीर छोड़ने से कुछ महीने पहले मम्मा जब अंबाला रेलवे स्टेशन से होकर कहीं जा रही थीं तब हम सब रेलवे स्टेशन पर मम्मा से मिलने गये। मम्मा ने कहा, अभी बड़ी माँ को याद करना, छोटी माँ को याद नहीं करना क्योंकि बड़ी माँ ने ही सब शिक्षायें दी हैं। उस समय बड़ा सुन्दर गीत निकला था, 'मेरे लाडलो जागो, मम्मा नहीं होगी, बाबा नहीं होगे।' जब मम्मा के शरीर छोड़ने का समाचार मिला तो मन में आया कि अब मैं ब्रह्माकुमारी बनूँगी तो सारे यज्ञ में हलुवा कौन बाँटेगा।

बाबा का उमंग-उत्साह

जब माता-पिता माउंट आबू में बाबा से मिलने गये तो धोबीघाट पर रखे एक पत्थर के लिए बाबा ने कहा, बच्चे, इसे उठाकर दूसरी तरफ रख दो। पिताजी कमजोर थे, सोचा, मैं अकेला कैसे रखूँगा, कोई आयेगा तो रखूँगा। बाबा फिर आये, पूछा, बच्चे, रखा नहीं? पिताजी ने कहा, बाबा, मैं अकेला कैसे रखूँ? बाबा ने कहा, अरे बच्चे, इसमें क्या बड़ी बात है, चलो मैं रखवा देता हूँ। पिताजी को बड़ा आश्चर्य हुआ कि बाबा इतने बुजुर्ग होते भी कैसे उमंग-उत्साह में रहते हैं।

अगली दीवाली नहीं आयेगी

जब मैं 11वीं कक्षा में थी तो देहरादून की प्रेम बहन आबू से अंबाला आई, मुझे कहा, बाबा ने कहा है, दूसरी दिवाली नहीं आयेगी। मैंने सोचा, दुनिया खत्म हो जायेगी, फिर हमारा क्या होगा। मुझे दादियों का जीवन बहुत अच्छा लगता था। उस समय तक तो मैं बच्चों के हिसाब से ही सेन्टर आती-जाती थी, पर यह सुनने के बाद मैंने निश्चय किया कि मुझे ब्रह्माकुमारी बनना ही है। उस समय अंबाला में गोपी बहन (जो अभी पांडव भवन में है) थी, उसने मुझे ब्रह्माकुमारी बनने के लिए प्रेरित किया। ध्यानी दादी ने बाबा को पत्र लिखा और मेरे बारे में पूछा तो बाबा का जवाब आया कि बच्ची को पहले थोड़ा समय सेन्टर पर रखो, उसके संस्कार देखो। मैं दो-तीन महीने सेन्टर पर रही। बाद में दादी ने मुझे घर भेजा।

सप्त ऋषियों का समूह

घर जाने के बाद सारे परिवार के आबू जाने का कार्यक्रम बना। पांडव भवन में भी सबने मुझे आगे की पढ़ाई पढ़ने के लिए ही कहा और बोला कि देखना, बाबा भी यही कहेंगे। मैंने कहा कि बाबा मेरे दिल की लगन को जानते हैं, वे ऐसे नहीं कहेंगे। शाम को हिस्ट्री हॉल में सारा परिवार बाबा से मिला। बाबा ने टोली दी और कहा, बच्ची, अब तो तुम सेवा में निकलोगी ना! मैं खुश कि बाबा ने मेरे दिल की बात रख ली। बाबा ने हमारे परिवार के लिए कहा कि यह (पिताजी, माताजी, विजय भाई जिसने अभी शरीर छोड़ दिया है, अरुण भाई, अनिल भाई, अश्विनी भाई और मैं) सप्तऋषियों का समूह है । हम सब भाई-बहनें भांगड़ा करते, गीत गाते

तो बाबा कहते, यह भांगड़ा पार्टी है। रोज़ बाबा की प्रेरणायें मिलतीं। हम बाबा का हाथ पकड़कर घूमते। पिताजी ने बाबा से कहा, बाबा, आप इस बच्ची को ट्रेनिंग देना। बाबा ने कहा, ट्रेनिंग की ज़रूरत नहीं, यह देखने में तो माता लगती है, इसको क्या ट्रेनिंग चाहिए। माताजी, पिताजी तथा पार्टी चली गई और मैं मधुबन में रह गई। हम मम्मा के कमरे में रहते थे। सुबह साढ़े तीन बजे बाबा के कमरे में झांकते तो पाते कि लाइट जल रही है, बाबा योग में हैं। फिर हम सोचते कि हम भी कल तीन बजे उठेंगे। अगले दिन तीन बजे उठे तो भी बाबा को योग करते हुए पाया।

विचित्र सेवा करके दिखानी है

एक बार मैं हिस्ट्री हॉल में भाइयों की तरफ संदली पर बैठकर योग करा रही थी। एक तरफ भाई बैठे थे, दूसरी तरफ बहनें। जब बाबा आये तो मैं अचानक ही संदली से उठ गई। मेरा पैर सो गया था, चल नहीं पाई तो संदली के नीचे ही साइड में बैठ गई। बाबा ने कहा, बच्ची, साइड में क्यों बैठी हो, शेरनियाँ साइड में नहीं बैठती, सामने बैठती हैं। एक बार ब्रह्मा बाबा से मैंने कहा, बाबा, आपके साथ फोटो लेना है तो बाबा ने कहा, शिवबाबा की तो फोटो आयेगी नहीं, इस बूढ़े की आयेगी, इसका क्या करोगी? एक बार बाबा ने प्रश्न पूछा, बच्ची, शिवबाबा चित्र वाला है या विचित्र? मैंने कहा, विचित्र है। तो बाबा ने कहा, बच्ची, तुम पास हो गई, ऐसी कोई विचित्र सेवा करके दिखानी है।

माँ का हाथ ठीक हो गया

सन् 1968 में बाबा ने मुझे दिल्ली तोता-मैना सेन्टर पर जाने के लिए कहा। बृजमोहन भाई तथा मोहिनी बहन उस समय मधुबन आये हुए थे, वापिस नंगल जा रहे थे। बाबा ने उनसे कहा, बच्ची को दिल्ली सेन्टर पर छोड़ देना। मैं पहली बार सेन्टर पर गई। सेन्टर पर रहने का कोई अनुभव नहीं था। माताजी ने शिक्षा दी थी कि सेन्टर पर जैसा मिले, उसे प्यार से स्वीकार करना है, किसी भी बात में ना नहीं करना, सदा हाँ जी कहना, कोई तुम्हारी बुराई करे तो सोचना किसी और के लिए कह रहा है। कभी भी संगदोष में नहीं आना। ये शिक्षायें मुझे सेन्टर लाइफ में बहुत काम आईं। लौकिक भाइयों के हालचाल पूछने के पत्र रोज़ आते थे। माँ को हाथ की तकलीफ थी, कपड़े नहीं धो सकती थी। घर में मैं ही कपड़े धोती थी। माँ ने बाबा से पूछा, बाबा, बच्ची सेन्टर पर रहेगी पर मेरा हाथ तो ठीक नहीं है। बाबा ने कहा, चिन्ता मत करो, ठीक हो जायेगा। सचमुच ही मेरे सेन्टर पर जाने के बाद माँ का हाथ ठीक हो गया।

हाँ जी का पाठ

एक बार रोज़ी बहन मधुबन में बाबा से मिलकर आई थी, कहने लगी, तुम्हें अव्यक्त बापदादा ने याद किया। मैंने कहा, ऐसा कैसे हो सकता है कि बाबा मुझे याद करे। उसने बताया कि बाबा से एक कन्या मिल रही थी। उसे किसी दूसरे सेन्टर पर भेज रहे थे। वह मना कर रही थी। फिर दादी ने कहा, इसके लिए बाबा से पूछेंगे। बाबा ने भी कहा, बच्ची, दादी जैसा कहती है, वैसा करो। उसने कहा, नहीं, मुझे नहीं जाना। फिर बाबा ने कहा, बच्ची, हाँ जी का पाठ सीखना हो तो कोलाबा में जो सुषमा बच्ची है ना, उससे सीखो। मैं बहुत खुश हुई कि बाबा ने मुझे याद किया।

जून, 1982 से मैं जामनगर सेवाकेन्द्र पर आ गई। उस समय सेवाकेन्द्र पर एक भी जिज्ञासु नहीं था। बाबा पर पूरा विश्वास था। बहुत विघ्न आये, तीन साल तक मनसा सेवा की। अव्यक्त बापदादा ने एक मुलाकात में कहा था, **सेवा में कभी किसी को नहीं देखना, आगे बढ़ते जाना। बाबा तुम्हारे साथ है।** तब से कोई भी समस्या आने पर बाबा पर छोड़ देती हूँ, आधा घंटा योग करती हूँ और फ्रेश हो जाती हूँ। ❖

बाबा के नेत्रों से निकली प्रकाश की किरणें

● ब्रह्माकुमारी शंकरी देवी, जम्मू

मेरी आयु 84 वर्ष है। सन् 1965 से राजयोग की शिक्षा और जीवन की श्रेष्ठ धारणाओं पर चल रही हूँ। जम्मू में जब अलौकिक जन्म हुआ तब वहाँ सिर्फ दो या तीन भाई ही ब्रह्माकुमारी संस्था से जुड़े हुए थे। कोई भी माता या बहन ईश्वरीय ज्ञान से परिचित नहीं थी। अनेक भ्राँतियाँ फैली हुई थीं। हमारे घर के पास ही आश्रम खुल गया जिसमें सुन्दरी बहन जी, लक्ष्मी बहन जी तथा आशा बहन जी रहते थे। मैंने आश्रम जाना शुरू किया तो पतिदेव विरोध करने लगे परंतु मेरे ऊपर यह रूहानी जादू पूरी तरह लग चुका था। मैंने अपना जीवन पहले दिन से धारणायुक्त तथा मर्यादित बना लिया था।

मातेश्वरी जी से मिलन

सन् 1965 में मातेश्वरी जी ईश्वरीय सेवाओं के लिए जम्मू में आये। मुझे भी उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जम्मू के गांधीनगर स्थित आश्रम में मम्मा का भव्य स्वागत हुआ। उनके दर्शनों के लिए भीड़ लग गई। सारा कमरा खचाखच भर गया। मम्मा उस समय किसी संगमरमर की मूर्ति की तरह लग रही थीं। चेहरे पर दिव्य नूर चमक रहा था। मैं सबसे आगे खड़ी उस मूर्ति को निहार रही थी और दृष्टि भी ले रही थी। दृष्टि में एक अनोखी कशिश थी। फिर मम्मा की मैंने गोद ली, मानो किसी कोमल आसन पर मैं विराजित हूँ, ऐसा लग रहा था। मम्मा की पालना के वे क्षण आज भी मेरे मन-मस्तिष्क में तरोताजा हैं परंतु, इससे भी अधिक और सर्वाधिक खुशी के क्षण मेरे जीवन में तब आये जब मैंने साकार बाबा से बांधेली माता के रूप में मिलन मनाया।

जहाँ चाह, वहाँ राह

मुझे ज्ञान में चलते हुए एक वर्ष हो चुका था। धारणायें पूरी थी। माउंट आबू जाकर भगवान के रथ को देखने के लिए मन में तड़प थी। सवाल यह था कि जाऊँगी कैसे? घर में चार छोटे बच्चे (दो लड़के, दो लड़कियाँ) थे। मेरी लगन को देखते हुए बहनों ने मुझे आबू जाने की स्वीकृति दे दी। मधुबन जिस दिन पहुँचे, स्नान आदि से निवृत्त होकर बाबा से मिलने की घड़ी नजदीक आई। मन में डर था कि पता नहीं बांधेली माता से बाबा मिलेंगे या नहीं, या कहीं कुछ कहेंगे तो नहीं। बहन ने बाबा को सब कुछ बता दिया था। हम बाबा के कमरे में गये, बाबा संदली पर बैठे हुए थे। दया के सागर, प्रेम के सागर बाप ने एक नज़र मुझ पर डाली, एक नज़र बहन पर डाली और बोले, बहन, तुम इसे नहीं लाई हो, यह

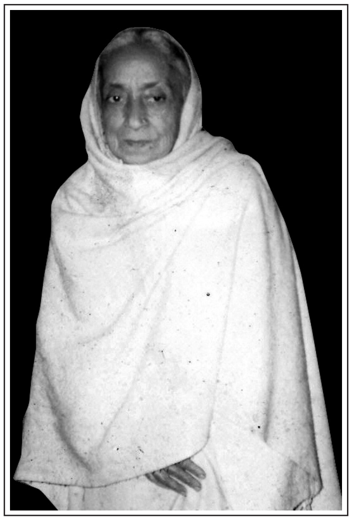

तुम्हें लेकर आई है। फिर मुझे कहा, आओ बच्ची, आओ। मैं बाबा के इन शब्दों को सुनकर गद्गद् हो गई। सोचा, बाबा को बताती हूँ, बाबा मैं बहुत युक्ति से चल रही हूँ, बहुत बंधन वाली आत्मा हूँ परंतु इससे पहले ही बाबा बोल पड़े, बच्ची बड़ी युक्ति से चल रही है। अंतर्यामी बाबा ने मेरे संकल्पों को अपने शब्दों में कह दिया। मैं बाबा से दृष्टि ले रही थी तभी चमकती हुई तेज प्रकाश की किरणें बाबा की आँखों से निकलती हुई दिखाई दी। (बाबा मुझ आत्मा को रूहानी सर्चलाइट दे रहे थे) अगले ही पल मैंने बाबा की गोद ले ली। असीम सुख का अनुभव हुआ। जैसे एक बच्चा, जो काफी समय से बिछड़ गया हो, अपने पिता से मिलन मना रहा हो, ऐसा अनुभव हुआ। दूसरे दिन मैं

अकेली ही जम्मू के लिए रवाना हो गई परंतु सफेद प्रकाश की वे किरणें मुझे आज भी वैसा ही अनुभव कराती हैं जैसा उस समय कराया था। सन् 1968 के नवंबर मास में मैं बाबा से मिली और 18 जनवरी 1969 को बाबा अव्यक्त हो गये। मेरा इस रथ द्वारा बाबा से इतना ही मिलन था। साकार बाबा से मिलन की प्राप्ति का अनुभव आज भी जब मैं किसी को सुनाती हूँ तो सुनने वाली आत्मा आत्म-विभोर होकर कह उठती है कि माता जी, आपने अनुभव नहीं सुनाया, हमें तो साकार बाबा से मिला दिया।

कितने यार बनाये हैं तूने?

एक दिन संशय और क्रोध के वशीभूत होकर मेरे पति ने चिल्लाकर पूछा, सच-सच बता, कितने यार बनाये हैं तूने? तू ब्रह्माकुमारियों के पास किससे मिलने जाती है? मैं शांत मुद्रा में खड़ी अपने पति को बाबा की याद की दृष्टि देती रही, बिल्कुल भी डरी नहीं। शक्ति से भरपूर होकर मैंने कहा, यदि आप पूछते हो कि कितने दोस्त बनाये हैं या किससे मिलने जाती हो, तो सुनो, मेरा एक ही दोस्त है। पति बोले, हाँ, हाँ ठीक है, अब उसका नाम भी बता। जवाब दिया, उसके बहुत नाम हैं। भक्ति में जिसके लिए हम गाते रहते हैं, तुम्हीं हो माता-पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं हो बंधु, सखा तुम्हीं हो। यह वही दोस्त, सखा या यार है, वह मेरा ही दोस्त नहीं, आपका भी है। सारी दुनिया का वही सच्चा दोस्त है, उसी से मिलने मैं भी जाती हूँ। इन शब्दों को सुनते ही पति एकदम शांत हो गये। गर्दन नीची कर ली और नज़रों को जमीन में गाड़ दिया।

पति का क्रोध शांत होता गया

इसी तरह, अन्य परीक्षायें भी आईं। परीक्षायें लगन को बढ़ाती रही। ज्ञान सत्य है, परमात्मा की पहचान सत्य है। सच्चाई है तो डरने की कोई बात ही नहीं है। पति का क्रोध भी शांत होता गया। योग में खाना बनता था, बाबा को स्वीकार कराकर पति तथा बच्चों को खिलाती थी, इससे सबकी बुद्धि शुद्ध होती गई। बाद में पतिदेव सहयोगी बनते चले गये।

मेरे चार बच्चों में से सबसे छोटी बेटी राधा, बाल्यकाल से ही ज्ञान-मार्ग पर चली, अभी भी वह मेरी देख-रेख करती है। बंधन के कारण उसने गंधर्वी शादी की। वर्तमान समय दोनों बाबा के हर कार्य में सहयोगी बनकर, श्रीमत का पालन करते हुए पवित्र जीवन व्यतीत कर रहे हैं। बिलावर तहसील में अपना घर उन्होंने बाबा को दिया हुआ है। मैं अधिकांश समय वहीं रहती हूँ। मुरली मुझे बहनों से मिल जाती है। मुरली दिन में पाँच बार पढ़ती हूँ। खुद ही पढ़ती हूँ क्योंकि सुनने में परेशानी है। बाबा की मुरली से बहुत प्यार है। यही मेरे उत्साहित जीवन का आधार है। शरीर कमजोर हो चुका है परंतु आत्मा बहुत शक्तिशाली है। हर दिन मुरली नये-नये संदेश लाती है और मुझे एक टॉनिक देती है। अंतिम इच्छा यही है कि बाबा की याद में चलते-फिरते शरीर का त्याग हो। दिल गा रहा है,

वे दिन भी कितने प्यारे थे,
ये दिन भी कितने प्यारे हैं।
बाबा तब भी साथ हमारे थे,
बाबा अब भी साथ हमारे हैं।

❖

बाबा की गोद में हुआ...पृष्ठ 21 का शेष

सुनाया तो उन्होंने कहा, 'जब तुम पैदा हुई तो यही अव्यक्त स्वरूप मेरे सामने भी आया था।' अव्यक्त रूप में बाबा जैसे कह रहे थे, बच्ची, बाबा गये नहीं हैं, बाबा आपके साथ हैं और साथ ही रहेंगे और बच्चों को साथ लेकर ही जायेंगे, ऐसे नहीं जायेंगे। इससे मुझे बहुत धीरज मिला। उसके बाद मैं यज्ञ में समर्पित हो गई। बाबा ने देश-विदेश में अनेक प्रकार की सेवाओं के निमित्त बनाया। तब से अब तक 'बाबा साथ है' इसी अनुभूति में चल रहे हैं। ❖

सूचना-पत्र

आप सब जानते हैं कि शान्तिवन के मनमोहिनी कॉम्पलेक्स में चार मंजिला गॉडलीवुड स्टूडियो बन रहा है और काफी तेजी से उसका निर्माण कार्य चल रहा है। नवंबर 30, 2011 को अव्यक्त बापदादा को मैंने स्टेज पर सुनाया कि बाबा हमने प्लैन बनाया है कि गॉडलीवुड स्टूडियो के ग्राउंड फ्लोर के दो छोटे स्टूडियो और फर्स्ट फ्लोर का एक बड़ा स्टूडियो जनवरी मास तक तैयार हो जायेगा तथा 2, 3 और 4 फ्लोर के निर्माण का कार्य भी 18 जनवरी तक लगभग पूरा हो जायेगा। उसके बाद 18 से 26 जनवरी, 2012 तक सजावट आदि का कार्य संपन्न करके 26-27-28 जनवरी 2012 के बीच किसी एक दिन इस स्टूडियो के उद्घाटन का कार्यक्रम रखने का विचार है। प्राण अव्यक्त बापदादा ने अपनी वरदानी श्रीमत देते हुए कहा कि भले आप कर सकते हो। उसके बाद हमने आदरणीया दादी जानकी जी से भी उद्घाटन के बारे में पूछा तो उन्होंने भी कहा कि जनवरी मास प्यारे ब्रह्मा बाबा का स्मृति मास है इसलिए भले आप जनवरी में ही इसके उद्घाटन का कार्यक्रम रख सकते हैं।

स्टूडियो भवन

सबकी शुभ राय से इस गॉडलीवुड स्टूडियो का उद्घाटन 26-27-28 जनवरी में हो जायेगा। फिर 2 फरवरी, 2012 को अव्यक्त बापदादा से इसके लिए विशेष श्रीमत लेंगे और इन तीनों स्टूडियो से विभिन्न प्रकार की प्रवृत्तियों का कार्यक्रम शुरू किया जायेगा। इसलिए इस सूचना पत्र द्वारा हम अपने दैवी परिवार के उन रत्नों का आह्वान करना चाहते हैं जो अभी तक छिपे हुए हैं, जिनकी कलाओं का हमें ज्ञान नहीं है, वे अपनी कलाओं द्वारा स्टूडियो के द्वारा होने वाली ईश्वरीय सेवाओं में अच्छे मददगार बन सकते हैं।

आपके पास कोई भी कला अथवा डायलाग, चर्चायें, फिल्म, ड्रामा तथा अनेक प्रकार के कार्यक्रमों आदि के बारे में कोई भी सुझाव हो अथवा स्टूडियो का संचालन कार्य करने-कराने का अनुभव हो तो आप हमें अपने बायोडेटा के साथ पूरी जानकारी बाम्बे ट्रस्ट मुख्यालय में भेज दें ताकि हम आपकी इन विभिन्न कलाओं का उपयोग कर सकें और जिस लक्ष्य से अव्यक्त बापदादा, आदरणीया दादियों एवं बड़े भाइयों ने स्टूडियो का निर्माण करवाया है, उसे पूरा किया जा सके। हमें आशा है कि इससे टीवी आदि द्वारा ईश्वरीय सेवाओं में चार चांद लग जायेंगे।

यह सूचना-पत्र हम यज्ञ से निकलने वाली पत्रिकायें हिन्दी ज्ञानामृत के साथ-साथ गुजराती, मराठी, तमिल, तेलगू, उड़िया भाषाओं की पत्रिकाओं में भी छपवा रहे हैं, साथ-साथ पत्र-पुष्प द्वारा भी यह सूचना भेजी जा रही है ताकि पूरे दैवी परिवार को यह जानकारी मिल सके। सहयोग के लिए धन्यवाद।

ईश्वरीय सेवा में,

आपका दैवी भाई बी.के.रमेश शाह

बाबा ने खड़े-खड़े दृष्टि-सुख दिया

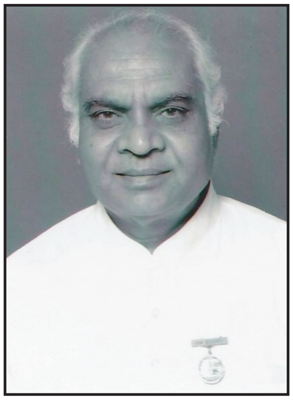

● **ब्रह्माकुमार शामकांत, पूना**

हमारे गाँव की ब्रह्माकुमारी पाठशाला तथा पूना सेवाकेन्द्र के कुछ भाई-बहनों की पार्टी मधुबन में बाबा से मिलने जाने वाली थी। हम भी इस पार्टी के साथ सुंदरी दीदी के मार्गदर्शन में मधुबन के लिए रवाना हुए। रास्ते में एक बात हमें बार-बार याद कराई गई कि जब आप बाबा से मिलेंगे तो बाबा पूछेंगे कि पहले कभी बाबा को मिलने आये थे तो जवाब देना कि हाँ बाबा, हम पाँच हजार वर्ष पहले भी इसी तरह, इसी वक्त आपसे मिलने आये थे। ऐसी ज्ञानयुक्त चर्चा ट्रेन में करते रहे। अगले दिन हम आबू रोड पहुँच गये।

भूरी दादी लेने आई

मधुबन से भूरी दादी हमें लेने के लिए आई हुई थी। उनके साथ राजस्थान परिवहन की बस में बैठकर हम सभी आबू पर्वत के बस अड्डे पर पहुँच गये। पांडव भवन वहाँ से थोड़ा दूर है, उन दिनों पैदल जाना पड़ता था। बहनजी ने कहा, शामकांत भाई, आप और यह पाटिल भाई सब सामान हाथगाड़ी पर, हमाल के साथ लेकर आना, हम आगे चलते हैं। हमने सब सामान रखा और बस अड्डे से निकल पड़े। दोपहर के एक-डेढ बजे होंगे। उस समय धूप बहुत कड़ी थी। हमाल हाथगाड़ी खींच रहा था और हम दोनों उसके पीछे चल रहे थे। पोस्ट ऑफिस के पास पाटिल भाई ने कहा, मैं बाजार में जाकर कुछ जरूरी सामान लेकर आता हूँ, आप हमाल के साथ चले जाना। जी हाँ कहकर हम आगे बढ़े।

रास्ते में किसी कारण से मुझे भी रुकना पड़ा और हमाल धीरे-धीरे आगे चलता रहा। बाद में मैं आगे बढ़ा तो रास्ते में न गाड़ी नजर आई, न हमाल। बहुत परेशान हो गया। एक व्यक्ति से पूछा, हमाल और सामान से भरी हुई गाड़ी कहीं दिखाई दी। उसने कहा, जी हाँ, इसी रास्ते से वो आगे गया है। पर उस रास्ते पर कोई भी नज़र नहीं आया। मैं रुक गया। आगे कहाँ जाना है, समझ में नहीं आ रहा था। सभी ओर घना जंगल और पहाड़ खड़े थे। तभी पगडंडी पर नज़र गई। उस पर हाथगाड़ी के चक्के के निशान थे। हम उन्हीं के पीछे आगे बढ़ने लगे।

ब्रह्मा बाबा आते दिखाई दिए

कुछ समय चलने के बाद बड़े लोहे के दरवाजे के पास पहुँचे। उसका छोटा दरवाजा खोलकर अंदर छलांग लगाई और दरवाजा बंद कर दिया। अंदर एक तरफ कोयले का ढेर और दूसरी तरफ पहाड़ी के पत्थर नजर आये। और आगे बढ़े तो एक मकान और अंगूर का बगीचा नजर आया। तभी सामने से ब्रह्मा बाबा आते दिखाई दिये। उन्हें देखते ही हम एक जगह पर स्थिर हो गये। सामने ब्रह्मा बाबा खड़े थे। दोपहर का सूर्य अपनी तेज किरणों का अनुभव करा रहा था। इतने में एक माता वहाँ आई और पूछा, आप कौन हो? हम हैरान हो गये। एक भी बोल मुख से नहीं निकल पाया। बाबा की परछाई चमक रही थी। इतने में माता की नज़र भी सामने गई। बाबा को देख लेने के बाद उसने धीमी आवाज से पूछा, आप कहाँ से आये हो? हमने कहा, पूना से।

भ्रकुटि के मध्य दो दिव्य ज्योतियाँ

सामने ब्रह्मा बाबा खड़े थे। हम उन्हें देखते ही रह गये। उस समय कड़ी धूप में भी हमने जो अनुभव किया, वह अद्‌भुत परंतु सत्य था। ब्रह्मा बाबा का चेहरा बहुत तेजस्वी दिखाई दे रहा था। भृकुटी में तेजस्वी ज्योतिबिंदु आत्मा स्पष्ट नजर आ रही थी। हमें संकल्प आया कि इसी तन में शिवबाबा भी तो आते हैं। तभी ब्रह्मा बाबा के मस्तक में शिवलिंग भी चमकता हुआ नजर आया और फिर शिवलिंग के स्थान पर दिव्य ज्योति

का दर्शन हुआ। अब भृकुटी के बीच में दो दिव्य ज्योतियाँ चमक रही थीं। इस दृश्य को देखते-देखते विशेष शक्ति का अनुभव करने लगा। मेरा भी देह का भान नष्ट हो गया और हलकेपन की अनुभूति होने लगी। यही विदेही स्थिति थी जो शिवबाबा मुरली में सुनाते हैं। **आत्मा इस रूहानी अलौकिक मंगल मिलन से आनंदविभोर होकर नाच उठी। परमात्मशक्ति का अनुभव हमने कर लिया। ब्रह्मा बाबा के नयनों में रूहानी नूर चमक रहा था। मुझ आत्मा को प्रभु मिलन का अतीन्द्रिय सुख मिल रहा था। बाबा की दृष्टि में अलौकिक प्रेम समाया हुआ था।**

इतने में उस माता के बोल पुन: इस दुनिया में ले आए। वह बोली, भाई जी, आपकी पार्टी आ गई है। चलो, हम तुम्हें उनके पास पहुँचाते हैं। मैं माता के साथ चल पड़ा। पार्टी के भाई-बहनें अपना-अपना सामान उठाकर रूम की ओर जा रहे थे। उन्होंने कहा, चलो जल्दी, हमें स्नान आदि करके बाबा से मिलने जाना है। यह सुनकर मुझे हँसी आ गई क्योंकि कुछ ही क्षण पहले ब्रह्मा बाबा और शिवबाबा ने मुझे नज़र से निहाल किया था।

अब समझ रहा हूँ कि पहली बार देखने पर मुझे कल्पवृक्ष के चित्र के ऊपरी हिस्से में खड़े ब्रह्मा का इतना आकर्षण क्यों हुआ क्योंकि कल्प पहले मुझे प्रथम दृष्टि-सुख खड़े ब्रह्मा बाबा से ही मिला था। अब वही दृश्य फिर दोहराया गया और कल्प-कल्प दोहराया जाता रहेगा।

बाबा ने बनाया रूहानी गुलदस्ता

ब्रह्माकुमारी शान्ति, पानीपत

मैं पिछले 52 वर्षों से ईश्वरीय ज्ञान में चल रही हूँ। अंबाला (हरियाणा) में मुझे ईश्वरीय ज्ञान मिला। ध्यानी दादी जी ने मुझे मेरे सत्य रूप की पहचान दी। उस समय मेरी उम्र केवल 24 वर्ष थी। आयु कम होने के कारण (लोग कहते थे, यह ज्ञान में चलने की आयु नहीं है, बूढ़ी होकर ज्ञान लेना) परिवार, समाज और पति के विरोध का सामना करना पड़ा। सन् 1960 में एक बार अंबाला में एक विशाल मेला लगा और मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती जी 15 दिनों के लिए अंबाला में आये। यह मेरा परम सौभाग्य था कि मुझे मम्मा के ममतामय सान्निध्य में रहने का मौका मिला। मम्मा की गोद का अनुभव ऐसा है जिसे मैं भुलाए नहीं भूलती हूँ। मम्मा व बाबा के मेरे लिए हमेशा यही बोल होते थे कि तुम शिव-शक्ति हो, दुर्गा हो। सभी समस्याओं को खत्म करने वाली हो।

बाबा जब दिल्ली में मेजर की कोठी पर आये तो वहाँ पर हमने बाबा की गोद ली और अतीन्द्रिय सुख का अनुभव किया। बाबा को देखते ही, कब उनकी गोद में चली गई, पता ही नहीं चला। लौकिक माँ मेरे जन्म के छह दिन बाद और पिता छह वर्ष बाद शरीर छोड़ गये थे। मुझे तो बाबा द्वारा ही मात-पिता का सच्चा अनुभव हुआ।

रूहानी गुलदस्ते का निर्माण

मेरे चार लौकिक पुत्र और एक लौकिक पुत्री है। पुत्री सुदेश करीब 42 वर्षों से समर्पित रूप से मानसा सेवाकेन्द्र पर अपनी सेवायें दे रही है। एक बेटा भी समर्पित है। बाकी तीन बेटे व बहुएँ ज्ञान में चल रहे हैं। एक बेटे के घर गीता पाठशाला भी है। पोते-पोतियाँ ईश्वरीय सेवा में सहयोगी हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि मेरे युगल जोकि हमारा विरोध किया करते थे, आज बाबा के गुणगान करते नहीं थकते हैं। वो कहते हैं, तुम सब एक हो गये तो मैं क्यों अकेला रह जाऊँ। अब तो हर खुशी, हर प्राप्ति को वे बाबा की देन मानते हैं। तन-मन-धन से बाबा की सेवा करते हैं। इतना सब परिवर्तन देख मैं बहुत हर्षित हूँ और शुक्रगुजार हूँ बाबा की जो उन्होंने सारे परिवार को रूहानी गुलदस्ता बनाकर, रूहानी खुशबू बिखेरना सिखा दिया। ❖

पतियों का पति मिला

● **ब्रह्माकुमारी फूला, आबू पर्वत**

मेरा जन्म सन् 1937 में जिला मुलतान (पाकिस्तान) में हुआ। विभाजन के बाद भारत में अंबाला छावनी में आए और बाद में कानपुर में रहे, वहीं ईश्वरीय ज्ञान मिला। कानपुर में सन् 1953 में गंगे दादी, प्रकाशमणि दादी की बड़ी बहन सती दादी, आत्ममोहिनी दादी, शीतलमणि दादी आदि सेवारत थे।

बाबा सपने में आए

मेरे को दुनिया से बहुत वैराग्य था, लगता था, कहीं भी शान्ति नहीं है। वैराग्य के कारण संकल्प आता था कि जंगल में जाकर तपस्या करूँ लेकिन फिर ख्याल आता था, वहाँ शेर-चीते खा जायेंगे। मैं नारायण की भक्ति करती थी। मन ही मन उनको कहती थी, मुझे इस दुनिया से दूर ले चलो पर मालूम नहीं कहाँ ले चलो। एक रात सपने में मैंने सफेदवस्त्रधारियों की बड़ी सभा देखी और एक वृद्ध को संदली पर बैठे देखा। उन्होंने मुझे एक लोटा दिया और कहा, इसे साफ कर लाओ। मैं साफ करके ले गई। वृद्ध बोले, और चमका कर लाओ। मैं ज्यादा चमका कर ले गई और कहा, हमने ज्ञान तो सुना ही नहीं। वृद्ध ने कहा, ज्ञान आपको फिर सुनाऊँगा। इसके बाद मेरी नींद टूट गई। अब समझ में आता है कि वह बुद्धि रूपी लोटा था जिसमें अंधश्रद्धा भरी थी। भक्ति से मेरी सब मनोकामनायें पूरी होती थी लेकिन एक इच्छा पूरी होने के बाद दूसरी उठ जाती थी। इच्छाओं के कारण मन में अशान्ति रहती थी। किसी ने मुझे राय दी कि 25 पूर्णमासी करोगी तो पति अच्छा मिलेगा। मैंने 25 से भी ज्यादा पूर्णमासी की, मुझे पतियों का पति परमात्मा मिल गया।

बाबा की हर श्रीमत पर निश्चय

हमारे पड़ोस की एक माता हर सत्संग में जाती थी। एक दिन वह मुझे ब्रह्माकुमारी केन्द्र पर ले गई। उस समय बाबा का पहला ऑप्रेशन मुम्बई में हुआ था। सेन्टर के सब लोग वहाँ गये थे। जब हम दुबारा गए तब बाबा ने मुम्बई से सबके लिए सेब भेजे थे। मुझे भी सेब मिला। सेवाकेन्द्र पर जब बाबा की फोटो देखी तो मुझे सपने वाला बाबा याद आया। सत्यनारायण की कथा में आता है कि भगवान बूढ़े ब्राह्मण के तन में आया, उसे देख मुझे लगा, यह वही सत्यनारायण भगवान धरती पर आ चुका है। बाबा की हर श्रीमत मुझे राइट लगने लगी। बाबा की बातों को मैं जब दूसरों को सुनाती थी तो उन्हें समझ में नहीं आती थी। कई तो मुझे ही उल्टा सिखाने लगे।

लोगों ने मेरे माँ-बाप को भड़काया पर मेरी लगन पक्की थी। घरवालों ने शादी के लिए दबाव डाला पर मैं सारे दिन भक्ति में ही रहती थी।

भक्ति का फल मिला

मैंने परिवार वालों से मधुबन जाने की छुट्टी माँगी, मुझे मना कर दिया गया। मैंने कहा, भले पैसा मत दो, छुट्टी तो दे दो। उन्होंने सोचा, पैसा तो है नहीं, कैसे जायेगी पर मैं पैसा उधार लेकर मधुबन आ गई। फिर सिलाई करके सारा उधार उतार दिया। एक मास मधुबन में रही। मम्मा, बाबा का हाथ पकड़कर घूमने जाती थी। वापस गई तो रात-भर तपस्या करती थी और कहती थी, बाबा, आपने अपना बनाया, फिर यहाँ क्यों रखा है? मेरा मन करता था, मैं उड़कर बाबा के पास चली जाऊँ। घरवाले कहते थे, या तो ब्रह्माकुमारी बनो या शादी करो। हमने कहा, हमें लिखकर दो

कि आप हमें सेन्टर पर रहने की छुट्टी देते हो। फिर पिता जी ने खुशी से लिखकर छुट्टी दी। इस प्रकार, ज्ञान में चलने के एक साल बाद ही मैं कानपुर में गंगे दादी के पास सेवाकेन्द्र पर आ गई। मुझे अनुभव होता था कि मैं बाबा के साथ-साथ हूँ। साकार बाबा साथ-साथ नजर आते थे। मुझे खुशी इतनी थी कि खुशी के मारे भूख भी नहीं लगती थी। बाबा ने भक्ति का फल दिया।

बाबा ने कहा, मैं तुम्हारे सामने हूँ

जब बाबा अव्यक्त हुए तब मैं कानपुर में थी। दीदी यू.पी. के दौरे पर थी। दीदी मधुबन आई तो उनके साथ माताजी (कानपुर सेन्टर के निमित्त बाऊजी की युगल) भी आ गई। मेरे को सेन्टर पर अकेले छोड़ गए। मेरे मन में प्रश्न था, बाबा गए, अब मेरा क्या होगा, यह सोचकर मैं रो रही थी। **तभी मेरे सामने बाबा आ खड़े हुए, बोले, बच्ची, रोती क्यों हो, मैं कहीं गया थोड़े हूँ, तुम्हारे सामने हूँ। जब भक्ति से तुम्हारी आश पूरी होती थी तब मैं दिखाई थोड़े पड़ता था पर आश तो पूरी करता था, अब तो मैं तुम्हारे सामने हूँ।** मैंने कहा, मैं कानपुर में नहीं रहूँगी, मधुबन में रहूँगी। उसी साल अर्थात् 1969 में मैं मधुबन में आ गई। मधुबन में मैंने टोली, फल, गाइड, बिस्तर आदि कई विभाग संभाले। मेरे अंदर सदा यही लक्ष्य रहा कि बड़ों की हर आज्ञा का पालन करना है। ❖

गो सून, कम सून

ब्रह्माकुमार रमजान, पूना जी.पी.ओ.

आज से 45 वर्ष पूर्व की बात है, ब्रह्मा बाबा मुंबई में रीगल सिनेमा के सामने के वाटरलू मेन्शन में ईश्वरीय सेवार्थ आये थे। संदली पर बैठे बाबा ने जब मुझे दृष्टि दी तो मैंने बाबा को अशरीरी पाया। फिर बाबा ने यादप्यार देकर सबको टोली (प्रसाद) भी बाँटी। बाबा से जब व्यक्तिगत मुलाकात हुई तो रोते हुए मैंने बाबा की गोद में अपना सिर रख दिया। बाबा भी गाल पर प्यार से पुचकार करते हुए बच्चे-बच्चे कहने लगे। एक बार पुष्पशान्ता दादी तथा जानकी दादी ने मिलकर ब्रह्मा भोजन की व्यवस्था की। हमें बुलाया गया, तब ब्रह्मा बाबा को अति साधारण-सी मुद्रा में भोजन लेते देख, मैं आश्चर्यचकित रह गया। उन दिनों बाबा ने आनंद किशोर भाई के द्वारा पहली बार मुंबई में त्रिमूर्ति, गोला और कल्पवृक्ष का रंगीन चित्र छपवाकर ऐलान किया कि जो भी मेरा सिकिलधा बच्चा होगा, वह अपने गुरु को यह चित्र भेंटकर आयेगा। उमंग-उत्साह में आकर, लोक-लाज छोड़कर, बेफिकर बादशाह बन मैं अपने मुरशीद शाह, करीम आगाखां को उसके बंगले में जाकर ये चित्र भेंट कर आया।

इसके बाद सेवाकेन्द्र गामदेवी में स्थानांतरित हो गया। मैं वहाँ सवरे क्लास कर, फिर पास के बाबुलनाथ की पहाड़ी पर सारा दिन योग कर, शाम को फिर क्लास करने आ पहुँचता। जब 18 जनवरी, 1969 ब्रह्मा बाबा अव्यक्त हुए और दादी प्रकाशमणि जी को माउंट आबू बुला लिया गया, मैं आत्मा भी ड्रामानुसार पहुँच गया।

मधुबन में दादी ने मुझे पहरे की ड्यूटी दी। कभी तो सारी-सारी रात जागकर भी ड्यूटी बजानी होती थी। उन दिनों भ्राता सूरज कुमार भी आ पहुँचे थे। मैं उनको बड़े सुंदर अक्षरों में मुरली लिखते हुए देखता रहता था। उनमें और भी बहुत-सी विशेषतायें थी। मधुबन में दादी ने मुझे हवाई महल में रहने को जगह दी तो मैंने सोचा कि यहाँ से अब जाना ही नहीं है। एक दिन दादी ने बड़ा प्यार और दुलार देते हुए कहा, यहाँ पर बैठ नहीं जाना है। मैं समझ गया कि गो सून, कम सून के बाबा के महावाक्य में जरूर कुछ राज़ है और मैं वापस अपने सेवास्थान पूना आ पहुँचा। प्यारे ब्रह्मा बाबा से साकार मिलन के वे अनुभव अब भी मेरे मन:पटल पर तरोताजा हैं और मुझे उमंग-उत्साह देते रहते हैं। ❖

ज्ञानामृत की 'ज्ञान दान योजना' के अंतर्गत 'वरदानी', 'महादानी' तथा 'दानी' टाइटल प्राप्त करने वाले बहन-भाइयों के नाम

वरदानी

मनसुख हापलिया- राजकोट (1001)
लक्ष्मण मोलिया- राजकोट (600)
संजय पिपलिया- राजकोट (500)
संजय अंबालिया- राजकोट (500)
काशीनाथ- धुलिया (351)
डॉ.कृष्णा खंडेलवाल- जयपुर (239)
डॉ.रामव्यास तिवारी- गाजीपुर (200)
आशीष कुमार- वाराणसी (200)
जगराज- मोरादाबाद (200)
डॉ.पी.आर.गुप्ता- जयपुर (200)
इंदू मोलिया- राजकोट (200)
मिलन मोलिया- राजकोट (200)
सरोज पीपडिया- राजकोट (200)
डॉ.मीनाक्षी एस.मोरे- अकोला (200)

महादानी

कल्पना- छतरपुर (110)
रमा- छतरपुर (100)
एन.बी.पटेल- छतरपुर (100)
ज्ञान बहन- छतरपुर (100)
आशा- हरपालपुर (100)
मालती- छतरपुर (100)
धर्मपाल- गुड़गाँव अशोक विहार (100)
सोमकांत शर्मा- रीवा झिरिया (100)
गोविन्द- भटिंडा (100)
अमित- मुंबई विले पार्ले (100)
रमा- भोपाल गुलमोहन कालोनी (100)
कल्पना- भोपाल गुलमोहन कालोनी (110)
आशा- भोपाल गुलमोहन कालोनी (100)
मालती- भोपाल गुलमोहन कालोनी (100)
ज्ञान- भोपाल गुलमोहन कालोनी (100)
एन.बी.पटेल- भोपाल (100)
बबली- लखीमपुर (100)
विजया- राजकोट (100)
पुरुषोत्तम- राजकोट (100)
शैलेश- राजकोट (100)
भारती- राजकोट (100)
जवेरलाल मोदी- अंकलेश्वर (100)
वर्षा- लातूर (100)
रवि- पाँवटा साहिब (100)

दानी

राकेश- राजकोट (86)
गोरी धमालिया- राजकोट (80)
मोनिका- छतरपुर (75)
भारती- छतरपुर (75)
लक्ष्मण अग्रवाल- छतरपुर (75)
मीना- धुलिया (75)
सुनीता- धुलिया (75)
रघु- सिरसा (75)
लक्ष्मण अग्रवाल- भोपाल (75)
मोनिका- भोपाल (75)
भारती- भोपाल (75)
संजय- लखीमपुर (70)
जगदीश प्रसाद- रायपुर (72)
नरेश बाघमार- रायपुर (70)
ओ.पी.नासा- गुड़गाँव (61)
गिरधारी लाल वर्मा- जयपुर (60)
श्रद्धा- भोपाल (60)
नंदा- नवगांव (60)
श्रद्धा- छतरपुर (60)
नंदा- भोपाल (60)
वशराम डोबारिया- राजकोट (60)
प्राची- बिजावर (50)
सुलेखा- बिजावर (50)
माधुरी- छतरपुर पन्ना नाका (50)
राजकुमार विश्वकर्मा- गाजीपुर (50)
लालजी यादव- गाजीपुर (50)
नेहा- झालावाड़ (50)
रामनिवास- सिरसा (50)
पालाराम- सिरसा (50)
विशाल कुमार- सिरसा (50)
महावीर- भटिण्डा (50)
अशोक- भटिण्डा (50)
किरण- भटिण्डा (50)
किरण- मुंबई विले पार्ले (50)
आर.एस.चौहान- भोपाल (50)
रमेश गांधी- भोपाल (50)
ओमप्रकाश अग्रवाल- भोपाल (50)
रीना- भोपाल (50)
रूपा- भोपाल (50)
कमला सोनी- भोपाल (50)
माधुरी- भोपाल (50)
प्राची- भोपाल (50)
सुलेखा- भोपाल (50)
बिन्दु- लखीमपुर (50)
मंजू- लखीमपुर (50)
संगीता- लखीमपुर (50)
सत्यनारायण सोनी- राजगढ़ (50)
रामचंद्र सेरावत- राजगढ़ (50)
कंचन शाकरिया- राजकोट (50)
सुरभि- राजकोट (50)
रामजी भुवा- राजकोट (50)
चंद्रिका चोवाटिया- राजकोट (50)

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 atamprakash@bkivv.org